सं. 148 जनवरी - मार्च 2016 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्र कृषि एवं किसान कार्य मंत्री से उत्कृष्ट वार्षिक प्रतिवेदन पुरस्कार स्वीकार करते हुए

कृपया पृष्ठ 4 देखें

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी. सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

विषय सूची

समुद्री मात्स्यिकी जनगणना - 2016 3
अनुसंधान मुख्य अंश 5
बैठकें 7
स्थापना दिवस समारोह 12
स्वच्छ भारत 15
प्रशिक्षण कार्यक्रम 16
प्रदर्शनियाँ 20
राजभाषा कार्यान्वयन 21
विशिष्ट व्यक्तियों का दौरा 22
मनोरंजन क्लब 23
कृषि विज्ञान केन्द (एरणाकुलम) समाचार 24
कार्यक्रम में सहभागिता 26
मानव संसाधन विकास 29
कार्मिक समाचार 30

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक
भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी. ओ.
कोच्ची - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष: 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मेल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादक

डॉ. यू. गंगा

संपादकीय मंडल

डॉ. रेखा जे. नायर
डॉ. आर. जयभास्करन
डॉ. काजल चक्रबर्ती
श्री डी. लिंग प्रभु
श्रीमती पी. गीता
श्री अरुण सुरेन्द्रन
श्री पी. आर. अभिलाष

हिन्दी संपादन

श्रीमती ई.के. उमा

निदेशक कहते हैं

सभी को हार्दिक अभिवादन!

तिमाही के दौरान संस्थान ने समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में मानवशक्ति, डेमोग्राफी, प्रौद्योगिकी और अवसंरचना सुविधाओं पर लगभग 9 लाख परिवारों से आंकड़े संग्रहण करते हुए समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2016 सफल रूप से पूरी कर ली। भारत सरकार द्वारा नयी 'राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति' के गठन के रूप में देश के विभिन्न भागों में हितधारकों की बैठकें आयोजित करने के कार्यों में भी हम सक्रिय रूप से लगे हुए थे। पशुपालन, डेयरी और मात्स्यिकी विभाग (डी ए डी एफ) द्वारा ये दोनों कार्य संस्थान को सौंपे गए। यह भी अत्यंत गर्व की बात है कि संस्थान को भा कृ अनु प के बडे संस्थानों की श्रेणी में वर्ष 2014-15 के लिए उत्कृष्ट वार्षिक प्रतिवेदन पुरस्कार प्राप्त हुआ। भारत के मात्स्यिकी सेक्टर में अनुसंधान और जानकारियों का हिताधारकों तक प्रसार करने में यह प्रेरणादायी बनेगा। इस अवधि के दौरान समुद्री मछली पालन और संबंधित गतिविधियों पर विविध प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। आशा है कि इस तरह के कार्यक्रमों द्वारा मछुआरों की कुशलता और आजीविका विकल्पों में बढ़ोत्तरी होने से सकारात्मक असर जगाया जा सका और इससे आगामी वर्षों में समुद्री संवर्धन प्रौद्योगिकियों को बहुत अधिक लोगों द्वारा स्वीकार किया जाएगा और समुद्री मछली उत्पादन भी बढ़ जाएगा। इस अग्रणी मात्स्यिकी संस्थान की स्थापना 3 फरवरी, 1947 में हुई और अब सातवें दशक में प्रवेश कर रहा है। आगे बहुत अधिक कार्य किए जाने हैं और यह प्रमुख है कि जीवंत और टिकाऊ समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर बनाने के लक्ष्य प्राप्ति के लिए संयुक्त रूप से हमें बहुत अधिक कार्य किया जाना चाहिए। सभी पाठकों को आगामी तिमाही की शुभकामनाएं।

अ. गोपाल

ए. गोपालकृष्णन
निदेशक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन कोच्ची में स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केन्द्र जो कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केन्द्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र का भा कृ अनु प के महानिदेशक के रूप में कार्यग्रहण

विज्ञात वैज्ञानिक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने दिनांक 22 फरवरी 2016 को सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भा कृ अनु प के रूप में कार्यग्रहण किया। डॉ. महापात्र प्रतिष्ठित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक एवं कुलपति के पद पर कार्यरत थे। इससे पहले उन्होंने राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (पूर्व में सी आर आर आइ), कट्टक के निदेशक के पद पर काम किया है।

आण्विक आनुवंशिकी और जीनोमिक्स के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर ख्याति प्राप्त डॉ. महापात्र के करीब 145 लेख 'नैचर' जैसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में और कई पुस्तकों के पाठों के रूप में प्रकाशित हैं। उनकी अनुसंधान उपलब्धियों में उच्च उपज वाला पहला बासमती चावल की किस्म, जिसमें आण्विक मार्कर समर्थित चयन द्वारा बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट को रोकने की क्षमता है, का विकास, चावल और टमाटर का भौतिक मानचित्रण एवं जीनोम अनुक्रम आदि प्रमुख हैं। वे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आइ एन एस ए), राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एन ए एस आइ) और राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एन ए ए एस), नई दिल्ली के अध्येता हैं।

समुद्री मात्स्यिकी जनगणना - 2016

गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिल-नाडु, आंध्र प्रदेश, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल जैसे सभी समुद्रवर्ती राज्यों और दमन और दीव तथा पुडुचेरी संघ राज्य क्षेत्रों में दिनांक 1 फरवरी, 2016 से लेकर 30 दिनों की अवधि के दौरान समुद्री मात्स्यिकी जनगणना-2016 सफल रूप से आयोजित की गयी। जनगणना में मछुआरा आबादी, उनकी समाज-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक और पेशेवर प्रोफाइल, व्यावसायिक यान और जाल का स्वामित्व, मत्स्यन से जुड़ी हुई गतिविधियों के लिए अन्य राज्यों में प्रवास, मत्स्यन और जीवन रक्षा उपायों का उपयोग और समुद्री मत्स्यन गाँव की जनसांख्यिकीय सुविधाएं आदि पर ध्यान दिया गया। इस महान उद्यम के लिए पशु पालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग (डी ए डी एफ), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आंशिक रूप से वित्तीय सहायता दी गयी। इस व्यापक कार्य का समन्वयन तथा निष्पादन भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ के पूरे समुद्र तट पर स्थित क्षेत्रीय, अनुसंधान एवं क्षेत्र केन्द्रों द्वारा किए गए। विभिन्न स्तरों पर सूचना संग्रहण के लिए मुख्यतः तीन प्रकार की अनुसूचियाँ थी। अनुसूची - I परिवार के स्तर पर सूचनाएं संग्रहित करने के लिए थी और यह अंग्रेजी और हिन्दी के अतिरिक्त आठ क्षेत्रीय भाषाओं याने कि गुजराती, मराठी, कन्नड, मलयालम, तमिल, तेलुगु, उड़िया और बंगला में तैयार की गयी। समुद्री मत्स्यन गाँव की जनसांख्यिकीय सुविधाएं अनुसूची -II के अंदर संग्रहित की गयी। अनुसूची -II के फार्म ए - ई मत्स्यन गाँव में उपलब्ध अवसंरचनात्मक सुविधाएं जैसे नाव निर्माण या मरम्मत करने के यार्ड, बर्फ की फैक्टरियाँ, कोल्ड स्टोरेज, हिमशीतीकरण प्लान्ट, प्रसंस्करण प्लान्ट, मछली इलाज के यार्ड आदि से संबंधित सूचनाओं के संग्रहण के लिए उपयोग किया जाता है। समुद्री मछली अवतरण केन्द्रों में उपलब्ध मत्स्यन यानों पर सूचना संग्रहित करने के लिए अनुसूची -III का उपयोग किया जाता है। जनगणना कार्यविधियों का समग्र समन्वयन निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा किया गया और इसके लिए अध्यक्ष, मात्स्यिकी संपदा निर्धारण प्रभाग द्वारा सारी सहायता प्रदान की गयी। अधिकतम विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करने हेतु

डॉ. ए. गोपालकृष्णन तंकच्चिमडम में समुद्री मात्स्यिकी जनगणना कार्यविधियों का निरीक्षण करते हुए

एफ आर ए डी के वैज्ञानिक द्वारा जनगणना आंकडे का सत्यापन करने का दृश्य

तिरुनेलवेली के उवारी में गणनाकार मछुआरों से आंकडा संग्रहण करते हुए

चेन्नई के काशिमेडु में जनगणना कार्य का दृश्य

प्रशिक्षित वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मचारियों द्वारा क्षेत्रवार, जिलावार और राज्य के स्तर पर आंकड़ा संग्रहण पर पर्यवेक्षण किया गया। 4057 समुद्री मत्स्यन गाँवों में प्रचलित लगभग 882,263 परिवारों से सूचनाएं संग्रहित करते हुए की गयी जनगणना दिनांक 1 मार्च, 2015 को सफल रूप से समाप्त हुई।

सी एम एफ आर आइ को भा कृ अनु प उत्कृष्ट वार्षिक प्रतिवेदन पुरस्कार 2014-15

बडे भा कृ अनु प संस्थानों की श्रेणी में उत्कृष्ट वार्षिक प्रतिवेदन पुरस्कार 2014-15 भा कृ अनु प - केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, केरल को प्रदान किया गया। नई दिल्ली में दिनांक 23 जनवरी, 2016 को आयोजित कार्यक्रम में श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री से डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने पुरस्कार ग्रहण किया। पुरस्कार के साथ दिए गए प्रशस्ति पत्र के अनुसार मौलिकता और पाठ की रिपोर्टिंग गुणता की श्रेणी में अंतर्राष्ट्रीय मान के अनुरूप है और प्रतिवेदन को सारे प्रतियोगी संस्थानों के प्रतिवेदनों में से उत्कृष्ट घोषित किया गया है।

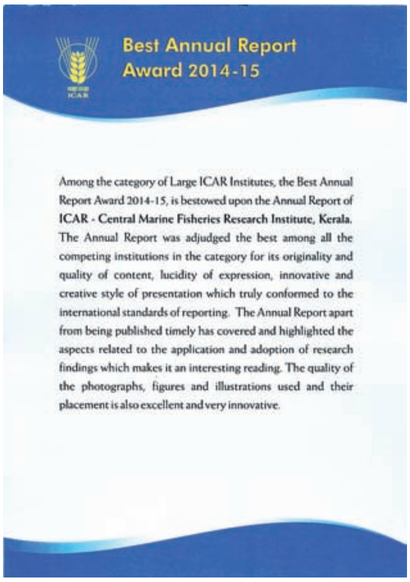

Best Annual Report Award 2014-15

Among the category of Large ICAR Institutes, the Best Annual Report Award 2014-15, is bestowed upon the Annual Report of **ICAR - Central Marine Fisheries Research Institute, Kerala.** The Annual Report was adjudged the best among all the competing institutions in the category for its originality and quality of content, lucidity of expression, innovative and creative style of presentation which truly conformed to the international standards of reporting. The Annual Report apart from being published timely has covered and highlighted the aspects related to the application and adoption of research findings which makes it an interesting reading. The quality of the photographs, figures and illustrations used and their placement is also excellent and very innovative.

सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा गुजरात राज्य के कच्छ जिले के भद्रेश्वर के तटीय क्षेत्रों में कृत्रिम मछली आवास तंत्र पर आधारित समुद्री पारिस्थितिक तंत्र की पुनःस्थापना पर 365 लाख रुपए की लागत की परामर्श परियोजना प्रारंभ करने के लिए दिनांक 29 जनवरी, 2016 को मात्स्यिकी आयुक्त, गुजरात के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किया गया।

आदिवासी मछुआरों को टी एस पी लाभ सौंपा गया

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 26 जनवरी 2016 को ट्राइबल सब-प्लान (टी एस पी) की बैठक आयोजित की गयी, इस में मुल्की में मछली पालन करने वाले आदिवासी मछुआरों ने भाग लिया। इस अवसर पर टी एस पी के अंदर किए गए मछली संग्रहण के विपणन से प्राप्त 164,230 रुपए का चेक ट्राइबल ग्रुप को प्रदान किया गया।

जीवित चारा के लिए कोपीपोड की नयी प्रजाति की पहचान

पख मछली और कवच मछली के डिंभकों को जीवित चारा के रूप में उपयुक्त करने लायक साइक्लोपोड कोपीपोड को विलगन करके पहचान की गयी। कारवार के समुद्र से प्लवक जाल (120µm का जालाक्षि आकार) उपयुक्त करके साइक्लोपोड कोपीपोड का संग्रहण किया गया और इसे *मेटासाइक्लोप्स* वंश के अंदर आनेवाली नयी प्रजाति पहचानी गयी। परंपरागत एवं आण्विक वर्गीकरण तरीकों से प्रजाति पहचान की पुष्टि की गयी। अनुगामी पीढ़ियों का अनुरक्षण किया गया। अंड युक्त कोपीपोडों के स्फुटन की दर 85% थी। नोप्ली (70µm) और कोपीपोड (220µm) के छोटे आकार होने की वजह से इन्हें मछली और चिंगट के डिंभकों के आहार के रूप में दिया जा सकता है। नोप्ली के आकर और स्फुटन की दर में शैवाल आहार के साथ काफी भिन्नता पायी गयी। यह देखा गया कि *आइसोक्राइसिस गाल्बाना* से खिलाने के समय नोप्ली का न्यूनतम आकार था। यह प्रजाति व्यापक स्तर पर लवणता याने कि 5-35‰ तक सहन कर सकती है। पख मछली, कवच मछली, एशियन समुद्री बास, कोबिया और मिल्क फिश में किए गए परीक्षणों से व्यक्त हुआ कि यह अत्यंत उचित जीवित चारा है।

(जयश्री लोका, एस.एम. सोनाली, संध्या सुकुमारन और बी. संतोष की रिपोर्ट)

हिन्द महासागर में ट्यूना के प्रवास स्वभाव पर उपग्रह टेलीमेट्री अध्ययन

कवरत्ती के लक्षद्वीप में 16 - 22 मार्च, 2016 के दौरान 107 - 127 से. मी. के बडे आकार वाले आठ येलो फिन ट्यूनाओं में उपग्रह टैग लगाए गए। टैगन करने के हर एक स्थान में सी टी डी (चालकता, तापमान, गहराई) द्वारा पानी के प्राचल की रिकार्ड की गयी और विश्लेषण के लिए प्लवकों का संग्रहण किया गया। ट्यूना स्टॉक में डी एन ए पर आधारित अध्ययन करने और प्रवास का स्वभाव जानने हेतु फिनलेट भी संग्रहित किए गए।

(डॉ. प्रतिभा रोहित, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

डी एन ए पर अध्ययन करने हेतु टैगन किए गए ट्यूना से फिनलेट लेने का दृश्य

पाक उपसागर में स्कूबा सर्वेक्षण से पाम्बन द्वीप में रोडोलिथों की उपस्थिति

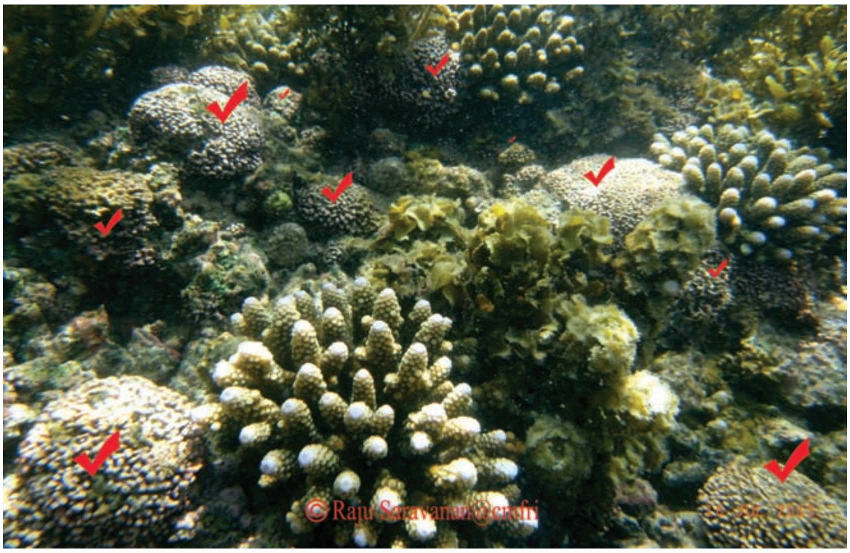

पाम्बन द्वीप में रोडोलिथ संस्तरों का दृश्य

पाम्बन द्वीप में अग्नि तीरम से पाम्बन लाइट हाउस तक तटीय समुद्र के 10 कि.मी. के क्षेत्र में एक टीम द्वारा स्कूबा सर्वेक्षण आयोजित किया गया। सर्वेक्षण किए गए सभी स्टेशनों में मेर्ल या रोडोलिथ नामों से जाने जाने वाले काल्केरियस लाल शैवाल समुदाय की उपस्थिति पायी गयी। रोडोलिथ मुक्त रहने वाले, नोन-जेनिकुलेट कोरल्लाइन लाल शैवाल (कोरलिनेल्स, रोडोफाइटा) के नोड्यूल हैं। रोडोलिथ संस्तर हार्बर एपी बेन्तिक, क्रयोफॉनल और इनफॉनल समुदाय हैं और ये समुद्री क्षेत्र के महत्वपूर्ण आवास स्थान माने जाते हैं। यह पाक उपसागर में 1-5 मीटर की गहराई मेखला में रोडोलिथ संस्तरों के वितरण पर किए जाने वाला पहला अध्ययन है।

(आर.शरवणन, एल.रंजित और एस.जास्मिन, समुद्री जैवविविधता प्रभाग की रिपोर्ट)

लक्षद्वीप में महासागरीय स्क्विडों पर सर्वेक्षण

लक्षद्वीप समूह के चार स्टेशनों (स्टेशन 1- 10°19’N; 73°36’7’’E गहराई : 2030m, स्टेशन 2-11° 5’49’’N; 72° 13’22’’E गहराई :670m, स्टेशन 3 - 9° 37’29’’N; 71° 45’35’’E गहराई :2342m, स्टेशन 4 - 9° 56’37’’N;74° 0’24’’E गहराई :3500m) के चारों ओर *स्थेनोट्यूथिस औलानिएन्सिस* की खोज करने के उद्देश्य से 11-16 जनवरी 2016 के दौरान एफ वी सिल्वर पोम्पानो द्वारा महासागरीय स्क्विड सर्वेक्षण आयोजित किया गया। सभी स्टेशनों से 10 मी. की गहराई में क्षितिज रेखा में लगाए गए आइ के एम टी जाल (आइसक - किड मिडवाटर ट्राल) उपयुक्त करके स्थूल प्राणिप्लवकों के नमूने संग्रहित किए गए। रात को प्रकाश लगाने से बड़ी मात्रा में महासागरीय स्क्विडों को एकत्रित किया जा सका, लेकिन इनको पकड़ा नहीं जा सका। मगर, आनाय परिचालन (135-200 मी. की गहराई) से *बातीट्यूथिस बासिडिफेरा, हिस्टियोट्यूथिस मिरान्डा, ओक्टोपोट्यूथिस* प्रजाति और *अब्रालिया* प्रजाति जैसी विरल स्क्विडों का संग्रहण किया गया। महासागरीय स्क्विडों के स्थेनोट्यूथिस औलानिएन्सिस, आन्सिस्ट्रोचीरस लेस्यूरी, अब्रालियोप्सिस प्रजाति, अब्रालिया प्रजाति आदि पारालार्वे को भी पकड़ा गया।

(*मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट*)

बातीट्यूथिस बासिडिफेरा | *हिस्टियोट्यूथिस मिरान्डा* | *ओक्टोपोट्यूथिस* प्रजाति | *अब्रालिया* प्रजाति

गहरे सागर के प्रौढ़ स्क्विड़

समुद्री स्लगों का धंसन

ओड़िशा के पुरी तट पर 22 फरवरी 2016 को निम्न ज्वार के वक्त समुद्री स्लग ग्लाकस अटलान्टिकस का बड़ी मात्रा में धंसन हुआ। ये जीवित थे और तट पर रेंगते थे। ऐसी घटना विरल रूप से होती है और ओड़िशा तट पर पहली बार होती है। नूडीब्रैंच के अंदर आने वाले ये वेलापवर्ती है और शीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय समुद्रों में पाए जाते हैं। भारत में आंध्रा प्रदेश और तमिल नाडु में इनकी उपस्थिति रिकार्ड की गयी है और अब ओड़िशा की इस रिपोर्ट से वहाँ तक इनके वितरण का विस्तार व्यक्त होता है। समुद्री स्लग खुले महासागर में पाए जाने पर भी पुरी में अचानक तट पर इनका धंसन हुआ होगा। स्लग का पृष्ठ भाग चांदी धूसर रंग का और उदरीय का भाग पीला नीला / काला रंग का था। लंबा और पतला शरीर चपटा था और उंगली के समान शाखाओं जैसे उपांगों से युक्त भी था। ये विषैले निडेरियनों को खाते हैं और दर्दकारी नेमटोसाइटों को परभक्षियों के प्रति सुरक्षा के रूप में अपने ऊतक में संभरण करते हैं। मानव अगर स्लग का इस्तेमाल करने या अचानक इसके संपर्क में आने पर खतरनाक तीव्र पीड़ा होती है। पुरी के समुद्र तट पर स्नान के लिए बहुत पर्यटक आते रहते हैं और उनपर विपरीत संघात होने की आशंका है।

ग्लाकस अटलान्टिकस

(*डॉ. रीता जयशंकर, पुरी क्षेत्र केन्द्र की रिपोर्ट*)

सीपी जैव भार पर सर्वेक्षण

अष्टमुड़ी झील की पांच मेखलाओं में 24-27 फरवरी, 2016 के दौरान सीपी जैव भार पर सर्वेक्षण किया गया और बहुत कम सीपी संस्तर देखे गए, इसका कारण समकालिक अंडजनन का अभाव या जल्दी अंडजनन होगा। पिछले बार के समान और इससे अधिक अच्छा स्टॉक मिलने के लिए देर से अंडजनन प्रत्याशित है।

राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति पर हितधारकों की बैठक

राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति (एन एम एफ पी) 2016 की रूपरेखा बनाने के भाग के रूप में भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने विभिन्न केन्द्रों में हितधारकों की बैठकें आयोजित कीं। गुजरात, महाराष्ट्र और गोवा राज्यों की पहली बैठक मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में 25 जनवरी, 2016 को आयोजित की गयी। डॉ. के. सुनिल मोहम्मद, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. प्रेम चन्द, महानिदेशक, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, राज्य मात्स्यिकी विभाग के कार्मिकों और तीनों राज्यों के मछुआरों के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति की बैठक में अध्यक्षता करते हुए

केरल और कर्नाटक राज्यों के हितधारकों के लिए दूसरी बैठक सी आइ एफ एन ई टी, कोच्ची में 2 फरवरी 2016 को आयोजित की गयी। इस श्रेणी की तीसरी बैठक, जो तमिल नाडु और पुडुचेरी के गुणभोक्ताओं के लिए थी, 9 फरवरी 2016 को मद्रास अनुसंधान केन्द्र में आयोजित की गयी। इस बैठक में डॉ. वाइ. एस. यादवा, निदेशक, बी ओ बी पी-आइ जी ओ एवं सदस्य, एन एम एफ पी समिति अध्यक्ष रहे। अन्य प्रतिनिधियों में डॉ. पोल पान्डियन, मात्स्यिकी विकास आयुक्त, डी ए डी एफ, डॉ. गोपाल कृष्णा, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई तथा सदस्य, एन एम एफ पी सदस्य, एफ एस आइ के महानिदेशक के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. रामलिंगम और तिरुमोहनसुन्दरम, सहायक निदेशक (मात्स्यिकी), तमिल नाडु प्रमुख थे। आइ सी एस एफ और एस आइ एफ एफ एस जैसे गैर सरकारी संगठनों के अतिरिक्त तमिल नाडु के तिरुवल्लूर, चेन्नई, रामेश्वरम, तूत्तुकुडी, कन्याकुमारी जिलों और पुडुचेरी संघ राज्य क्षेत्र के मछुआरों ने बैठक में भाग लिया।

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में 11 फरवरी, 2016 को आयोजित हितधारकों की बैठक की अध्यक्षता डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने की और बैठक में आंध्र प्रदेश, ओड़िशा और पश्चिम बंगाल से करीब 120 मछुआरों ने भाग लिया। डॉ. रामलिंगम, आंचलिक निदेशक, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण; श्री बिमल के दास, मात्स्यिकी उप निदेशक, ओड़िशा, श्री संजय पांडेय, डी ए डी एफ; डॉ. के सुनिल मोहम्मद और डॉ. टी.वी. सत्यानन्दन, प्रधान वैज्ञानिक गण, भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ भी उपस्थित थे। इसी प्रकार गुजरात के मछुआरों के सुझाव जानने के लिए वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में भी 23 फरवरी, 2016 को बैठक आयोजित की गयी।

चेन्नई अनुसंधान केन्द्र में आयोजित गुणभोक्ता बैठक का दृश्य

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र द्वारा आयोजित गुणभोक्ता बैठक का दृश्य

मुख्यालय में अनुसंधान परामर्श समिति की बैठक

अनुसंधान परामर्श समिति (आर ए सी) की 20वीं बैठक मुख्यालय, कोच्ची में 28 और 29 मार्च 2016 को आयोजित की गयी। डॉ. बी.एन. देशाय, भूतपूर्व निदेशक, एन आइ ओ ने बैठक की अध्यक्षता की। डॉ. आल्फ्रेड शेल्वकुमार, भूतपूर्व ए डी जी (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनुप, डॉ. प्रवीण पुत्रन, ए डी जी (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनुप, डॉ. ई. विवेकानन्दन, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और डॉ. पी.यु. ज़क्करिया, सदस्य सचिव, आर ए सी अन्य सदस्यों में प्रमुख थे। प्रभागों के अध्यक्षों और विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारियों ने क्रमशः अपने प्रभागों और केन्द्रों की कार्यविधियों और उपलब्धियों पर प्रस्तुतीकरण किया।

अनुसंधान परामर्श समिति की बैठक

उच्च शिक्षा और सहकारी अनुसंधान पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

महासागरीय विशेषताएं, दूर संवेदन, जलवायु व्यतियान और समुद्री जीव संपदाओं पर उच्च शिक्षा और सहकारी अनुसंधान में दीर्घकालीन सहयोग विकसित करने के लिए 3 फरवरी, 2016 को भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और नानसेन एनवयोर्नमेन्टल रिसर्च सेन्टर-इंडिया (एन ई आर सी आइ) के बीच समझौता ज्ञापन (एम ओ यु) पर हस्ताक्षर किया गया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. अजित जोसफ, कार्यकारी निदेशक, एन ई आर सी आइ और प्रोफसर एन.आर. मेनोन, सह अध्यक्ष, एन ई आर सी आइ द्वारा एम ओ यु पर हस्ताक्षर किया गया। एन ई आर सी आइ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के विज्ञान एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के अंदर औद्योगिक अनुसंधान संगठन के रूप में पंजीकृत और नानसेन अनुसंधान केन्द्रों के ग्रुप के अंदर आने वाला लाभ रहित अनुसंधान केन्द्र है। हस्ताक्षर करने की तिथि से लेकर पांच वर्ष तक एम ओ यु लागू होगा।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक और प्रोफसर एन.आर. मेनोन भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ और एन ई आर सी आइ के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का दृश्य

एम एस सी द्वारा वार्षिक निगरानी लेखा परीक्षा

अष्टमुडी झील की एम एस सी द्वारा प्रमाणित छोटी गला युक्त सीपी मात्स्यिकी की वार्षिक निगरानी लेखा परीक्षा 14 मार्च 2016 को आयोजित की गयी। डॉ. जिम आन्ड्रूस, अक्वोरा मराइन, यु के, डॉ. के.के. अप्पुकुट्टन, भूतपूर्व अध्यक्ष, मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ और डॉ. के.एस. मोहम्मद, अध्यक्ष, एम एफ डी के निगरानी टीम ने अष्टमुडी झील का मुआइना करके सीपी मछुआरों और मात्स्यिकी प्रबंधकों के साथ बातचीत किया। लेखा परीक्षा रिपोर्ट प्रत्याशित है।

नवोन्मेषी आहार के रूप में शुक्ति

मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग ने मछली खाने वाले उपभोक्ताओं के बीच स्वास्थ्य पूर्ण आहार के रूप में शुक्ति का प्रचार करने का नेतृत्व किया। मषविल मनोरमा दूरदर्शन चैनल ने 10 मार्च 2016 को दे शेफ नामक कुकरी शो कार्यक्रम में शुक्ति की रेसिपी सम्मिलित की गयी थी। श्रीमती सीतालक्ष्मी, कोच्ची के कुंजित्तइ की शुक्ति पालक ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और शुक्ति खपत पर स्थानीय विश्वासों और स्वास्थ्य के लिए शुक्ति के गुणों पर विवरण दिया। कोच्ची के कासिनो होटेल के शेफ जोस वर्की के नेतृत्व में 30 अप्रैल 2016 को शुक्ति रेसिपी पर आधारित कुकरी (पाक) प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

समुद्री संवर्धन पर भा कृ अनु प-शीतकालीन पाठ्यक्रम

उद्घाटन कार्यक्रम में पाठ्यक्रम मैनुअल के विमोचन का दृश्य

समुद्री संवर्धन प्रभाग द्वारा 5-25 जनवरी 2016 के दौरान 'समुद्री संवर्धन में उत्पादन वर्धन और टिकाऊपन के लिए प्रौद्योगिकी के विकास' विषय पर शीतकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। भा कृ अनु प के संस्थानों और विश्वविद्यालयों से आए गए 21 प्रतिभागियों को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ तथा अन्य अनुसंधान संगठनों के विशेषज्ञों द्वारा समुद्री संवर्धन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्रदान की गयी। फील्ड एवं फार्म में दौरा करने के अतिरिक्त मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का चार दिन का शैक्षिक दौरा भी आयोजित किया गया।

डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी ने शीतकालीन पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. जी. गोपकुमार, भूतपूर्व अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग ने आशीर्वचन दिया। डॉ. इमेल्डा जोसफ, पाठ्यक्रम निदेशक ने आमंत्रित व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। पाठ्यक्रम के दिनांक 25 जनवरी 2016 को आयोजित समापन कार्यक्रम में डॉ. एस. गिरिजा, निदेशक, राष्ट्रीय मात्स्यिकी संग्रहणोत्तर प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण संस्थान (एन आइ एफ पी एच ए टी) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रही। कार्यक्रम के दौरान डॉ. इमेल्डा जोसफ ने शीतकालीन पाठ्यक्रम की मसीक्षा की और प्रतियोगियों ने भी अपना मंतव्य प्रकट किया। डॉ. बोबी इग्नेशियस, पाठ्यक्रम समन्वयक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

(समुद्री संवर्धन प्रभाग की रिपोर्ट)

रामनाथपुरम जिला की मछुआरिनों के स्वयं सहायता समूहों द्वारा अलंकारी मछली पालनः विजय गाथा

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने रामनाथपुरम जिला के मछुआरिन स्वयं सहायता समूहों द्वारा अलंकारी मछली पालन स्वीकारने की विजय कहानी की स्क्रिप्ट तैयार की है। केन्द्र ने जी ओ एम बी आर टी द्वारा वित्त पोषित परियोजना मन्नार खाड़ी क्षेत्र की मछुआरिनों को चुनी गयी अलंकारी मछलियों के संतति उत्पादन पर क्षमता वर्धन के अंदर जिले के विभिन्न गाँवों के मछुआरों को अलंकारी मछली पालन के विविध पहलुओं पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया। केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त अधिकांश मछुआरिन जिला में अलंकारी मछली उत्पादन में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

केन्द्र से वर्ष 2014-15 के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त कुल 66 मछुआरों में से तंकच्चिमडम के 23 सदस्यों को अलंकारी मछली उत्पादन शुरू करने के लिए एन एफ डी बी योजना के अंदर रामनाथपुरम के राज्य मात्स्यिकी विभाग से 50 प्रतिशत सहायता प्राप्त हुई। इसी प्रकार 28-30 अक्तूबर, 2016 के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त 37 मछुआरों में से मंडपम के पांच मछुआरों ने अपने निवेश से समुद्री अलंकारी मछली पालन शुरू किया। मंडपम के मछुआरा ग्रुप को 24 मार्च 2016 को पेर्कुला, सीबे और फायर क्लाउन मछली के अंडजनक प्रदान किए गए। स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को प्रोत्साहनार्थ आधा इंच के आकार की किशोर मछली भी प्रदान की गयी। मछुआरों ने 45 दिनों में इन मछलियों को विपणन करने वैकटिपक से पहले एक इंच के आकार तक बढ़ाया। वैकल्पिक आजीविका के रूप में महिला ग्रुप को यह आर्थिक सशक्तीकरण और निर्णय लेने की क्षमता वर्धन का अवसर बन गया। भविष्य में इस तरह के उद्यम से स्फुटनशाला में उत्पादित अलंकारी मछली विपणन में प्रगति हो जाएगी।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक तंकच्चिमडम में अलंकारी मछली एकक का निरीक्षण करते हुए

स्फुटनशाला में उत्पादित कोबिया मछली संततियों का वितरण

तमिल नाडु के राज्य मात्स्यिकी विभाग ने एफ आइ एम एस यु एल -II परियोजना 'मात्स्यिकी एवं आजीविका कार्यक्रम' के अंदर तंकच्चिमडम में समुद्री पिंजरा मछली पालन के लिए रामनाथपुरम जिले के चार मछुआरा ग्रुपों को चुन लिया। इस सिलसिले में 23 फरवरी 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में कोबिया मछली संतति वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने कार्यक्रम में अध्यक्षता की और मछुआरा ग्रुपों को कोबिया के 3000 उंगलिमीन प्रदान किए। डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र, प्रभारी वैज्ञानिक ने सभा का स्वागत करते हुए जिले में पिंजरा मछली पालन पर संक्षिप्त विवरण दिया। डॉ. एम. काशीनाथपान्डियन, मात्स्यिकी उपनिदेशक, रामनाथपुरम और डॉ. बोबी इग्नेशियस, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची ने आशीर्वचन दिए। डॉ. आर. जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने आभार प्रकट किया। डॉ. बी. जोनसन, वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक मछुआरा ग्रुप को कोबिया उंगलिमीन प्रदान करते हुए

पिंजरे में कोबिया उंगलिमीनों के विमोचन का दृश्य

ब्लू स्विम्मर केकड़े का परीक्षणात्मक पालन

अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (ए आइ एन पी) के अंदर रामनाथपुरम जिले के वेदालै गाँव के मछुआरा ग्रुप द्वारा सहभागिता आधार पर 6 फरवरी 2016 को ब्लू स्विम्मर केकड़े पोर्टूनस पेलाजिकस का परीक्षणात्मक पालन शुरू किया। कैशुरीना खंभों से बनाए गए 10 x 10 फीट के आकार के पेन में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में पालन किए गए 4000 छोटे केकड़ों का संभरण किया गया। इनको आहार, दैनिक अनुरक्षण और निगरानी मछुआरा ग्रुप द्वारा किया जा रहा है और पालन कार्य प्रगति पर है।

(मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

छोटे केकड़ों को मछुआरों को प्रदान करते हुए

कच्छपों का विमोचन और जैवविविधता अभियान

समुद्री जैवविविधता प्रभाग ने केरल के विभिन्न भागों में आयोजित कच्छप विमोचन के तीन कार्यक्रमों में भाग लिया। प्रभाग की टीम ने कच्छपों के परिरक्षण की प्रधानता के बारे में जनता को अवगत कराया। ग्रीन रूट्स नैचर कन्सरवेशन, तोट्टप्पल्ली द्वारा 31 जनवरी, 2016 को आयोजित कार्यक्रम में डॉ. के.के. जोषी, प्रधान वैज्ञानिक के नेतृत्व में श्री श्रीकुमार के.एम. और श्री तोबियास पी. आन्टणी सहित तीन सदस्यों की टीम ने भाग लिया। क्लब के सदस्यों ने ओलीव राइडली कच्छप के 121 अंड संग्रहित किए और तोट्टप्पल्ली पुलिन में विशेष को डिजाइन स्फुटनशाला में अंडों का 48 घंटों तक निषेचन करने के बाद समुद्र में छोडा गया। श्री एन. पद्मकुमार, आलप्पुषा जिलाधीश, जी. सुधाकरन, एम एल ए, श्री एस. श्रीकुमार, सहायक वन संरक्षक और डॉ. के.के. जोषी, अध्यक्ष, समुद्री जैवविविधता प्रभाग, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ कार्यक्रम में उपस्थित थे। कच्छप विमोचन घटना के गवाह करीब 200 बच्चे व युवा के रूप थे। इसी तरह तृश्शूर के पालप्पेट्टी में 2 मार्च 2016 को और तोट्टप्पल्ली में 19 मार्च 2016 को स्थानीय कच्छप परिरक्षण ग्रुपों के सहयोग से समान कार्यक्रम आयोजित किए गए। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के टीम में डॉ. मिरियम पोल श्रीराम, डॉ. मोली वर्गीस, श्री अजु के राजु, श्री के.एम. श्रीकुमार, कुमारी एम. सेतुलक्ष्मी, श्रीमती के.ए. दिव्या और श्री तोबियास पी. आन्टणी शामिल थे।

छोटे पख वाले पाइलट व्हेल का व्यापक धंसन

मन्नार खाड़ी के मनप्पाड तट पर 14 जनवरी 1973 को 147 छोटे पख वाले पाइलट व्हेल ग्लोबीसेफाला, माक्रोरिन्कस के व्यापक धंसन पर रिपोर्ट की गयी थी। 43 वर्षों के बाद मनप्पाड तट के इसी स्थान पर 11 से 15 जनवरी 2016 को 81 छोटे पख वाले पाइलट व्हेल का धंसन हुआ। पहले अलन्तालैपादुवै नगर पुलिन में 11 जनवरी दोपहर को छोटे पख वाले पाइलट व्हेल को जीवित अवस्था में देखा गया। रात को 40 व्हेल भी जीवित अवस्था में तट पर आयीं। कल्लापोषी-कुलशेखरापट्टणम-मनप्पाड की तटीय मेखला में 12 जनवरी सुबह को 81 पाइलट व्हेल का धंसन हुआ। इनको बचाने का कठिन प्रयास करने पर भी दोपहर तक 45 व्हेल मर गयीं। शाम को इनकी लाशों का दफ़न किया गया। मणप्पाड पुलिन में 13 जनवरी को 28 व्हेल की लाश देखी गयी और तट पर (कल्लामोषी-मणप्पाड) इनको दफ़न किया गया। इसके अतिरिक्त कूडुत्तालै तट पर 15 जनवरी सुबह को दो पाइलट व्हेल की लाशों का धंसन हुआ। मणप्पाड तट पर कुलमिलाकर 75 मृत पाइलट व्हेल का धंसन हुआ। समुद्र में वापस जाने दिए 6 मादा पाइलट व्हेल की स्थिति का पता नहीं है। मृत व्हेल के शरीर पर कोई चोट, विकलांगता या बाहरी परजीवियों के लक्षण नहीं थे और ये साधारण और स्वस्थ देखे गए। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के तूत्तुकुडी, मंडपम केन्द्रों और मुख्यालय कोच्ची से वैज्ञानिकों के टीम ने धंसन हुए स्थान का मुआइना किया और इनके आकार का मापन और जीववैज्ञानिक नमूने संग्रहित किए। मंडपम केन्द्र के डॉ. शक्तिवेल और डॉ. रमेशकुमार सहित टीम ने शव-परीक्षा (पोस्टमोर्टम) की। पाइलट व्हेल के व्यापक धंसन के विविध कारणों पर विश्लेषण किया जा रहा है।

(टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र और मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र से प्राप्त सूचनाओं से आर. जयभास्करन द्वारा संकलित रिपोर्ट)

तट पर आए सीटेशियनों के लिए बचाव केन्द्र

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने महाराष्ट्र वन विभाग के मैंग्रोव सेल के सहयोग से महाराष्ट्र के सिन्धुदुर्ग जिला में धंसन हुए सीटेशियनों (व्हेल, डोल्फिन और पोरपोइसेस) का इस्तेमाल करने में प्राधिकारियों और मछुआरों में क्षमता वर्धन पर एक निधिबद्ध परियोजना (जी ओ आइ-यू एन डी पी-जी ई एफ) का प्रारंभ किया। विभिन्न विभागों से कुल 56 कार्मिकों और स्थानीय गाँवों के 87 लोगों को प्रशिक्षण दिया गया। समय पर संसूचना देने और उचित कार्रवाई उठाने की आवश्यकता को मानते हुए धंसन हुए सीटेशियनों का इस्तेमाल करने और इस तरह के धंसन पर डाटाबेस का अनुरक्षण करने के लिए संबंधित विभिन्न विभागों के बीच नेटवर्क स्थापित की गयी। कल्बादेवी पुलिन पर 11 सितंबर, 2014 को धंसन हुए स्पिन्नर डोल्फिन स्टेनेल्ला लोंगिरोस्ट्रिस को बचाने में यह नेटवर्क अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ। सिद्दुर्ग जिले के तटीय भागों में समुद्री स्तनियों के वर्धित धंसन को मानते हुए महाराष्ट्र वन विभाग ने सिन्धुदुर्ग जिला के मालवान तालुक के तर्काली में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के तकनीकी मार्गदर्शन में धंसन हुए सीटेशियनों के लिए पूरी तरह से सुसज्जित बचाव केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया। यह बचाव केन्द्र एक आदर्श केन्द्र के रूप में काम करेगा और भाविष्य में धंसन होने वाले सीटेशियनों पर समय पर कार्रवाई उठाने में सुविधा प्रदान करेगा।

(शक्तिवेल एम., मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र, रामकुमार एस., वैभव डी. मात्रे, डेविड सावंत और किशोर मइनकर, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

बलीन व्हेल का धंसन

मुम्बई के जुहु पुलिन पर 29 जनवरी 2016 को एक बलीन व्हेल की लाश का धंसन हुआ। इसे ब्राइड्स व्हेल पहचाना गया, बलनेप्टीरा एडेनी और इसकी लंबाई 1.3 मीटर और भार 20 टन आंके गए। पशु चिकित्सकों ने मृत्यु का कारण जांचने के लिए पोस्टमोर्टम विश्लेषण करने हेतु नमूने संग्रहित किए। बाद में वन विभाग के निरीक्षण पर तिमि की लाश का दफ़न किया गया।

(वी.वी. सिंह, रामकुमार एस., बी.ए. शिलेदार, के.आर. मइनकर, वी.डी. मात्रे, स्वप्निल और धनश्री, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में ओपन हाउस

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के 69 वां स्थापना दिवस के भाग के रूप में 3 फरवरी, 2016 को मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों में ओपन हाउस मनाया गया।

कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला में छात्रों का दृश्य

टूटिकोरिन की शुक्ति हैचरी में मुख्य अतिथि मुआइना करने का दृश्य

राज्य के विविध कॉलेजों और स्कूलों के छात्रों ने मुख्यालय में विभिन्न प्रयोगशालाओं का मुआइना किया। जैवविविधता संग्रहालय में प्रवालों और मोतियों जैसे समुद्री जीवों की कई प्रजातियों का प्रदर्शन किया गया था। संस्थान के विभिन्न प्रभागों ने अपनी अनुसंधान गतिविधियों और विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया। समुद्री जलजीवशाला, जीवविज्ञानीय प्रयोगशाला में मछलियों के प्रदर्शन, समुद्री संवर्धन प्रौद्योगिकियों और कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन केन्द्र (ए टी आइ सी) भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा विकसित जैविक पालन तरीकों से संबंधित विविध उत्पादन के विपणन के स्टॉलों की ओर आगंतुकों ने बडी अभिरुचि दिखायी। विविध कॉलेजों और स्कूलों से 2500 से अधिक छात्रों, अनुसंधानकारों और अध्यापकों ने दौरा किया।

रामनाथपुरम जिला के विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के सैकडों छात्रों ने मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र के जलजीवशाला और संग्रहालय का मुआइना किया। इस दौरान छात्रों को समुद्री संपदाओं के परिरक्षण, जैवविविधता के मामलों, समुद्री संवर्धन गतिविधियों और जलजीवशाला के अनुरक्षण के बारे में अंतगत कराया गया। टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में इसी दिवस सारी अनुसंधान प्रयोगशालाएं और सुविधाएं आम लोगों के लिए खुली रखीं। तूत्तुकुडी के मात्स्यिकी विभाग के सहयोग से स्कूल और कॉलेजों के छात्रों में समुद्री कच्छपों का परिरक्षण पर अवगाह जगाने के उद्देश्य से विशेष सत्र आयोजित किया गया।

छात्र गण ए टी आइ सी प्रदर्शन का अवलोकन करते हुए

मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई ने 12 फरवरी 2016 को कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला में ओपन हाउस आयोजित किया गया। केलम्बक्कम के सरकारी स्कूलों के करीब 200 छात्रों ने क्षेत्र प्रयोगशाला का दौरा किया और केन्द्र की वैज्ञानिक गतिविधियों पर सूचनाएं संग्रहित कीं। विभिन्न प्रभागों द्वारा नेमी अनुसंधान कार्यों के लिए उपयुक्त किए जाने वाले उपकरणों का प्रदर्शन किया गया और इनके बारे में छात्रों को विवरण दिया गया। छात्रों की जानकारी के लिए क्रस्टेशियनों, मोलस्क द्विकपाटियों, मछलियों आदि के जीवित नमूनों का भी प्रदर्शन किया गया।

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 3 फरवरी, 2016 को प्रदर्शनी आयोजित की गयी। स्थानीय 8 विद्यालयों के छात्रों ने केन्द्र का दौरा किया। संस्थान द्वारा विकसित और प्रचारित शंबु और पख मछली पालन प्रौद्योगिकियों का लघु नमूनों के रूप में प्रदर्शन किया गया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने 3 फरवरी 2016 को वेर्सोवा के भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई ओल्ड कैंपस के डॉ. डी.वी. बाल सभा गृह में स्थापना दिवस मनाया। डॉ. गोपाल कृष्णा, निदेशक एवं कुलपति, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई ने विशेष भाषण दिया। डॉ. नवीन शाह, भूतपूर्व प्रोफसर, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने सभा को अपने अनुसंधान अनुभवों का विवरण दिया।

मुख्यालय में मछलियों के प्रदर्शन का दृश्य

मुख्यालय में समुद्री संवर्धन कार्यविधियों की प्रदर्शनी

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में मराइन रीफ अक्वेरियम में आगंतुकों का दृश्य

समुद्री शैवालों पर राष्ट्रीय परामर्श बैठक

निदेशक समुद्री शैवालों पर परामर्श बैठक का संबोधन करते हुए

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में जैवप्रौद्योगिकी विभाग (डी बी टी), नई दिल्ली की वित्तीय सहायता से 18 फरवरी, 2016 को तटीय जनता की आजीविका के लिए समुद्री शैवालों के समुद्री संवर्धन, उपयोगिता और मूल्य वर्धन विषय पर राष्ट्रीय परामर्श बैठक आयोजित की गयी। बैठक में 25 वैज्ञानिकों और 15 आमंत्रित विशेषज्ञों ने भाग लिया।

डॉ. ए.एस. निनवे, परामर्शक, डी बी टी ने परामर्श बैठक का उद्घाटन किया और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ अध्यक्ष रहे। डॉ. एन. कालियपेरुमाल, भूतपूर्व प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र और श्री अभिराम सेथ, प्रबंध निदेशक, अक्वीअग्री लिमिटड ने आशीर्वचन दिए।

डॉ. जी. गोपकुमार (भा कृ अनु प एमरिटस वैज्ञानिक), डॉ. एम. बालुस्वामी (के आइ ए, चेन्नई), डॉ. ए.एस. निनवे (परामर्शक, डी बी टी), श्री अभिराम सेथ (प्रबंध निदेशक, अक्वीअग्री लिमिटड) और डॉ. वी. कृपा, प्रधान वैज्ञानिक, मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने तकनीकी प्रस्तुतियों का संचालन किया।

तकनीकी प्रस्तुतियों और गहन विचार-विमर्श के बाद नेटवर्क कार्यक्रम विकसित करने के लिए निम्नलिखित प्राथमिक क्षेत्रों की पहचान की गयी:

1. समेकित बहु पोषी जलकृषि (आइ एम टी ए) - उच्च ज्वारीय आयाम और रेखीय विस्तार के क्षेत्रों के लिए आगे शोधन करना

2. भारत की समुद्री शैवाल संपदाओं के प्रलेखन के लिए समेकित वर्गिकी अभिगम

3. तटीय समुदायों की आजीविका सुधारने के लिए स्ट्रेस प्रतिरोधी और आनुवंशिक रूप से परिवर्तित उच्च उपज वाले वाणिज्यिक प्रमुख समुद्री शैवालों के प्रभेदों का विकास

4. औद्योगिक और स्वास्थ्य के प्रयोग के लिए देशीय समुद्री शैवालों से नव कणों का जैव पूर्वेक्षण।

पंक केकड़ा पालन पर कार्यशाला

जी ओ एम-जी आइ इज़ेड-सी एम पी ए परियोजना महाराष्ट्र के रत्नगिरी जिला में वेलास और दभोल के बीच के खारा पानी जलक्षेत्र में पंक केकड़ा पालन की शक्यता के कार्यनीतिपरक निर्धारण को अंतिम रूप देने के संबंध में 15 मार्च, 2016 को डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दपोली, रत्नगिरी में कार्यशाला आयोजित की गयी। मैंग्रोव सेल, मुम्बई के जी आइ इज़ेड-सी एम पी ए-महाराष्ट्र परियोजना के कार्मिकों, वन विभाग के प्रतिनिधियों और अंजारले, केल्षी, वेलास और अनुश्री गाँवों के तटीय समुदायों के लोगों ने कार्यशाला में भाग लिया।

मुख्य अतिथि श्री सन्देश देवकर, पंचायत अध्यक्ष, अंजरले गाँव कार्यशाला का उद्घाटन करने का दृश्य

भागीदारों द्वारा ग्रुप अभ्यास

मुख्य अतिथि श्री सन्देश देवकर, पंचायत अध्यक्ष, अंजरले गाँव ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए रत्नगिरी जिला के तटीय समुदायों के लिए आजीविका के अवसरों पर बताया। श्री प्रशांत गावकर, उपाध्यक्ष, अनुश्री ग्राम पंचायत ने आशीर्वचन दिया। श्री भास्कर पोल, कार्यक्रम अधिकारी, जी आइ इज़ेड-सी एम पी ए-महाराष्ट्र परियोजना ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और मैंग्रोव सेल, मुम्बई की सहायता से पंक केकड़ा पालन के लिए प्राकृतिक मैंग्रोव आवासों की उपयोगिता करने के लिए भागीदारों से अनुरोध किया।

(डॉ.के.विनोद, कालिकट अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

विज्ञान के क्षेत्र में दर्शन, तरीकों और नैतिकता पर आपसी सह-अध्ययन कार्यशाला

विज्ञान के क्षेत्र में दर्शन, तरीकों और नैतिकता पर आपसी सह-अध्ययन कार्यशाला की श्रेणी की तीसरी कार्यशाला भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में 19-21 जनवरी, 2016 को आयोजित की गयी। डॉ. सुकुमार, डीन, मात्स्यिकी कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान, तूत्तुकुडी ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में पंद्रह व्यक्तियों ने भाग लिया। इस श्रेणी की चौथी कार्यशाला 27-29 जनवरी 2016 के दौरान विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में आयोजित की गयी। डॉ. जी. गोपकुमार, एमरिटस वैज्ञानिक ने 27 जनवरी को कार्यशाला का उद्घाटन किया। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में पंद्रह कार्मिकों ने भाग लिया। पांचवीं कार्यशाला 14-16 मार्च 2016 के दौरान भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र में आयोजित की गयी। डॉ. जयकर भंडारी, अध्यक्ष, सस्यशास्त्र विभाग, सरकारी कॉलेज, कारवार ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में करीब अठारह कार्मिकों ने भाग लिया। इस श्रेणी की छठी कार्यशाला विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में 22-24 मार्च के दौरान आयोजित की गयी। डॉ. जी. सैदा राव, भूतपूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और कार्यशाला में कुल 22 कार्मिकों ने भाग लिया।

भागीदारों द्वारा टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र

(डॉ.के.विजयकुमारन, पाठ्यक्रम समन्वयक की रिपोर्ट)

कृत्रिम भित्तियों पर परामर्श कार्यक्रम

आइ एफ ए डी-पी टी एस एल पी के वित्त पोषण की परामर्श परियोजना के अंदर तमिल नाडु के 12 तटीय जिलों (तिरुवल्लूर जिला के कोरैकुप्पम और सात्तानकुप्पम, कांचीपुरम जिला के कारिकाट्टुकुप्पम और सूलेरिकाडु, विल्लुपुरम जिला के गूनिमेडुकुप्पम और मुदलियारकुप्पम, नागपट्टिणम जिले में तोडुवै और चावडिकुप्पम, कडलूर जिले के पेरियाकुप्पम और अय्यम्पेट्टै और कन्याकुमारी जिले के कोवलम और पल्लम) में कृत्रिम भित्तियों के विनियोजन और निगरानी के लिए परामर्श टीम द्वारा प्राथमिक समाज-आर्थिक बेंचमार्क अध्ययन, जिलराशिकी और स्थान चयन आयोजित किए गए।

(जो के. किषकूडन, मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

कोवलम में कोबिया मछली का पिंजरे में पालन

तमिल नाडु मात्स्यिकी विभाग के एफ आइ एम एस यु एल-II के अंदर कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला में 31 मार्च 2016 को सहभागिता आधार पर जी आइ पिंजरों में कोबिया मछली पालन का प्रारंभ किया गया और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र से जीवित मछली संततियों का परिवहन किया गया।

शिलान्यास

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने 24 फरवरी 2016 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में टाइप-III कर्मचारी आवास का शिलान्यास किया ।

पर्यावरण अनुकूल कपड़ा थैलियों और जैविक खेती का प्रचार

मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग (एफ ई एम डी) और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के एन आइ सी आर ए एकक ने संयुक्त रूप से मुख्यालय में प्लास्टिक थैलियों के स्थान पर पर्यावरण अनुकूल कपड़े की थैलियों के निर्माण पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। ऊर्जा प्रबंधन केन्द्र, केरल, पर्यावरण और विकास केन्द्र, केरल और स्वदेशी विज्ञान कांग्रेस की शक्ति (महिला विंग) के सहयोग से 28 जनवरी 2016 को व्यापारी भवन जूबिली हाल, एडवनक्काड में कार्यक्रम आयोजित किया गया। मछुआरिनों के स्वयं सहायक संघों के माध्यम से पर्यावरण में प्लास्टिक का संचयीकरण कम करने के संबंध में लोगों के बीच अवगाह जगाने के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किया गया। वाइपीन के 15 स्वयं सहायक संघों की मछुआरिनों को मोडने वाले पर्यावरण अनुकूल और आकर्षक कपड़ा थैलियों की सिलाई में प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त गैर-मत्स्यन मौसम के दौरान मछुआरिनों को रोजगार का वैकल्पिक उपाय देना भी प्रशिक्षण का लक्ष्य था। डॉ. वी. कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम प्रभाग और डॉ. पी. कलाधरन, प्रधान वैज्ञानिक ने आशीर्वचन दिया। प्रशिक्षक श्रीमती तसलीम, भूमित्रम, कलूर ने सिलाई कार्यशाला आयोजित की।

(मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग की रिपोर्ट)

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में नियमित रूप से स्वच्छ परिसर गतिविधियों का आयोजन किया गया। केन्द्र में रीसाइक्लिंग ओर्गानिक अपशिष्ट उपयुक्त करके एक छोटा सब्जी पैच विकसित किया गया है, जहाँ चिचिंडा, रिज लौकी, भिंडी, हरी मिर्ची, खीरा और पालक आदि की पैदावार की जा रही है।

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में सब्जी पैच का दृश्य

मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में नवंबर, 2015 में मेरा गाँव मेरा गौरव योजना शुरू की गयी। मुख्यालय में इस योजना के कार्यान्वयन के लिए एक समिति का गठन किया गया, जिसके अंदर 4 वैज्ञानिकों के ग्रुप बनाए गए। हर एक ग्रुप को 50-100 किलोमीटर की दूरी के अंदर 5 मत्स्यन गाँव आबंटित किए गए। दत्तक गाँव की आधारभूत सूचनाएं प्राप्त करने और मत्स्यन तथा पालन परिचालन के संबंध में गाँव की मुख्य समस्याओं को समझने के लिए बेंचमार्क सर्वेक्षण आयोजित किये गये। केरल के एरणाकुलम, त्रिचूर, आलप्पुषा, कोषिक्कोड और कासरगोड जिलाओं के 44 मत्स्यन गाँवों में सर्वेक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों द्वारा तमिल नाडु में 10 मत्स्यन गाँवों, कर्नाटक में 5 मत्स्यन गाँवों, आंध्र प्रदेश में 10 मत्स्यन गाँवों और गुजरात में 10 मत्स्यन गाँवों में सर्वेक्षण आयोजित किए गए।

मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई के वैज्ञानिकों ने कांचीपुरम (19 और 29 जनवरी, 2016), तिरुवल्लूर (21-22 जनवरी, 2016) और चेन्नई (25 जनवरी, 2016) जिलों के चुने गए 10 गाँवों के मछुआरों के लिए बैठकें आयोजित की गयीं और तमिल नाडु में दिसंबर 2015 में हुए बाढ़ के प्रभाव पर विवरण संग्रहित किया।

(जी. महेश्वरुडु, नोडल अधिकारी, मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम और मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में प्रशिक्षण

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में एफ आइ एम एस यु एल- II के अंदर समुद्री पिंजरा मछली पालन विषय पर 2-6 फरवरी 2016 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कन्याकुमारी, कांचीपुरम और रामनाथपुरम के कुल 23 लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस दौरान पिंजरा मछली पालन, आहार, पिंजरा जाल सजाना, जाल बदलना आदि पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। समुद्री पख मछलियों और अलंकारी मछलियों के अंडशावक विकास और संतति उत्पादन प्रौद्योगिकी को समझने के लिए पालन स्थानों और समुद्री पिंजरा स्थान और समुद्री शैवाल पालन स्थान का दौरा किया गया। प्रशिक्षण का समापन समारोह 6 फरवरी 2016 को आयोजित किया गया।

एच डी पी ई वेल्डिंग का व्यावहारिक सत्र

मन्नार खाडी जैवमंडल आरक्षण न्यास (जी ओ एम बी आर टी) की निधिबद्ध परियोजना चुनी गयी अलंकारी मछलियों का संतति उत्पादन के अंदर मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 22 से 24 मार्च 2016 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में मन्नार खाड़ी के मुत्तुपेट्टै भारती नगर, मंगलेश्वरी नगर, विवेकानन्दपुरम, मुत्तुराज नगर, पुदिवीरनपट्टिणम गाँवों से कुल 59 मछुआरों ने भाग लिया। मंडपम में लघु पैमाने के समुद्री अलंकारी मछली पालन एककों में दौरा करके समुद्री अलंकारी मछली विपणनकारों के साथ आपसी विनियम आयोजित किया गया। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त जानकारी का स्तर समझने के लिए उनके बीच विषयगत मन परीक्षण आयोजित किया गया और प्रशिक्षण की प्रभावकारिता सूचकांक आकलित की गई। प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम दिनांक 24 मार्च 2016 को चलाया गया, जिसमें डॉ. टी.एस. डांगे, आइ एफ एस, निदेशक, जी ओ एम बी आर टी ने समापन भाषण दिया और भागीदारों को प्रमाण पत्र प्रदान किया। डॉ. बी. जोनसन, वैज्ञानिक एवं परियोजना का प्रधान अन्वेषक ने कृतज्ञता अदा किया।

समुद्री अलंकारी मछली पालन एकक में प्रशिक्षणार्थी गण

(ए.के. अब्दुल नाज़र और बी. जोणसन, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

डी बी टी द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

जैवप्रौद्योगिकी विभाग (डी बी टी) द्वारा प्रायोजित मात्स्यिकी पेशेवरों के लिए आण्विक जीवविज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का दूसरा सत्र 2 नवंबर 2015 को शुरू होकर 30 जनवरी 2016 को समाप्त हुआ। भागीदारों में डॉ.बबिता राणी और श्री दामोदरन के., वैज्ञानिक गण, भा कृ अनु प-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (सी आइ एफ ई), मुम्बई, श्रीमती एन.जेसीन्ता, सहायक प्रोफसर, मात्स्यिकी विज्ञान कॉलेज, मुतुकुर, आंध्र प्रदेश और श्री पी.सायूज, तकनीकी सहायक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ सम्मिलित थे।

इस दौरान 10 आमंत्रित भाषण सहित कुल 78 भाषण और व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए। प्रशिक्षणार्थियों के लिए आण्विक जीवविज्ञान, जैव-पूर्वेक्षण, रोग निदान और पोषण के विभिन्न पहलुओं पर कार्यरत विभिन्न संस्थाओं (भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, भा कृ अनु प-सी आइ बी ए, भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर, एन आइ वी ई डी आइ, एन ए एन एस ई एन, एन सी ए ए एच और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ) के वैज्ञानिकों और विद्वानों के साथ आपसी विचार-विमर्श का अवसर प्रदान किया। भागीदारों के लिए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र में अकशेरुकियों के कोशिका संवर्धन पर 4 दिनों (20 से 23 जनवरी 2016 तक) का व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। भागीदारों ने मुत्तुक्काड में भा कृ अनु प-सी आइ बी ए के अंदर कार्यरत हैचरी और पालन खेत का भी मुआइना किया। उनको प्रशिक्षण के दौरान सीखे गए विभिन्न आण्विक तकनीकों में से चुने गए विषयों पर लघु परियोजनाएं दी गयीं। डॉ. विद्या जयशंकर, डॉ. सी.पी. पूजा और डॉ. वी. श्रीनिवास राघवन ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के संकाय सदस्यों के रूप में भाग लिया।

क्षमता वर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक प्रशिक्षण मैनुअल का विमोचन करने का दृश्य

सी एम एफ आर आइ मुख्यालय में 27-31 अक्तूबर 2015 के दौरान (समुद्री अलंकारी मछली प्रजनन और हैचरी में संतति उत्पादन) विषय पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। भारत के विभिन्न भागों से कुल आठ किसानों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। पाठ्य विषयों के अतिरिक्त प्रशिक्षणार्थियों के लिए कांच के टैंक सजाना, समुद्री जलजीवशाला सजाना, अंडशावक टैंक सजाना, अंडशावकों का चयन एवं संभरण, दैनिक आहार और अक्वेरियम का अनुरक्षण, प्रजनन, अंडों और डिंभकों का इस्तेमाल, सूक्ष्मशैवाल और पादपप्लवकों (समुद्री रॉटिफर, कोपीपोड और क्लाडोसिरा) का संभरण और बडे पैमाने में उत्पादन, आर्टीमिया संवर्धन, जीवित खाद्य संवर्धन और संग्रहण, डिंभकों का किशोर अवस्था तक पालन और फिर सोर्टिंग और परिवहन के लिए पैकिंग आदि विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर प्रशिक्षणार्थियों को आजीविका के विकल्प और स्वरोज़गार के रूप में समुद्री अलंकारी मछली पालन एकक शुरू करने के लिए समुद्री अलंकारी मछलियों के अंडशावक और जीवित खाद्य प्रदान किए गए।

(के.मधु, समुद्री संवर्धन प्रभाग की रिपोर्ट)

मछुआरा समुदाय की शिक्षित बेरोज़गार युवतियों को कुशलता और नौकरी पर आधारित प्रशिक्षण के आयोजन के लिए मात्स्यिकी विभाग, केरल सरकार के अंदर मछुआरिन सहायता संघ (एस ए एफ) द्वारा वित्त पोषित एक महीने का क्षमता वर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान में 10 फरवरी से 13 मार्च 2016 के दौरान आयोजित किया गया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। एक महीने के क्लास रूम प्रशिक्षण के बाद दूसरे चरण में *स्वस्थाने* परीक्षणात्मक प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि और उनकी अभिरुचि को मानते हुए उनकी नियुक्ति के उद्देश्य से 25 नौकरी प्रशिक्षण केन्द्रों को चुना गया।

(श्याम सलिम, पाठ्यक्रम समन्वयक की रिपोर्ट)

मुख्यालय में 11-16 जनवरी 2016 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में केरल सरकार के मात्स्यिकी विभाग के तेरह कर्मचारियों ने भाग लिया। 'मात्स्यिकी संपदाओं के परिरक्षण और प्रबंधन तथा सांख्यिकीय सर्वेक्षण' विषयक प्रशिक्षण में सर्वेक्षण के तरीके, समुद्री मात्स्यिकी प्रबंधन की ओर पारिस्थितिकी पहल और उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी आदि विषयों पर अवलोकन किया गया।

(ई.एम. अब्दुसमद, पाठ्यक्रम समन्वयक की रिपोर्ट)

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में 17-22 मार्च 2016 के दौरान 'जीवित खाद्य संवर्धन' विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। आंध्र प्रदेश और चारों ओर के मछली / चिंगट हैचरियों से कुल सोलह व्यक्तियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। उनको समुद्री शैवालों का विलगन और शुद्धीकरण, पख मछलियों और कवच मछलियों के डिंभकों के खाद्य के रूप में उपयुक्त प्लवकों के बडी मात्रा में संवर्धन पर डॉ. शुभदीप घोष और डॉ. बिजी सेवियर के नेतृत्व में प्रशिक्षण दिया गया।

(विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र में ए आइ एन पी के अंदर सहभागी केन्द्रों के सह-प्रधान अन्वेषकों के लिए पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी पर 8-12 फरवरी 2016 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(कारवार अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

शुक्ति पालन में प्रशिक्षण

दक्षिण कन्नड जिले के दो मछुआरिन ग्रुपों के लिए रैक एवं रेन तरीके द्वारा शुक्ति (*क्रासोस्ट्रिआ माड्रासेन्सिस, सक्कोस्ट्रिआ कुकुल्लेटा*) पालन पर प्रशिक्षण दिया गया। कर्नाटक में पहली बार इन शुक्ति पालकों को कर्नाटक सरकार की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर के वी वाइ) से सहायता प्राप्त हुई। प्रशिक्षण के दौरान साम्बवी और पावंजे नदी मुखों पर बाँस के खंभों से रैक बनाया गया और स्पैट संग्रहण करने के लिए शुक्ति कल्च सामग्रियाँ लगायी गयीं।

(गीता शशिकुमार, प्रतिभा रोहित और जी.डी. नटराजा, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

मछली आयु निर्धारण में प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा कृ अनु प) के वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के लिए कोच्ची में 14-18 मार्च 2016 के दौरान 'स्टॉक निर्धारण के लिए कठोर भाग उपयुक्त करके मछली के आयु निर्धारण की बुनियादी बातें' विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई और भा कृ अनु प-सी ए आर आइ के वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। नमूना संग्रहण, ओटोलिथ सार निचोड और प्रसंस्करण, वलय उपयुक्त करके आयु निर्धारण तथा स्टॉक निर्धारण में आयु आंकडे का मान्यकरण और प्रयोग पर क्लास चलायी गयी।

(ई.एम. अब्दुसमद, पाठ्यक्रम समन्वयक की रिपोर्ट)

ओटोलिथ एक्स्ट्राक्शन पर प्रशिक्षण का दृश्य

ए टी आइ सी में आगंतुक

इस अवधि के दौरान भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (ए टी आइ सी) में अनेक मछुआरों और अन्य हितधारकों ने मुआइना किया। केरल, कर्नाटक, गोवा के राज्य मात्स्यिकी विभागों, अंडमान एवं निकोबार, लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्रों, उड़ीषा और महाराष्ट्र के कार्मिकों और बंगलादेश के मात्स्यिकी विभाग के कार्मिकों और मछुआरों ने भी इस अवधि के दौरान ए टी आइ सी का मुआइना किया। एन आइ एफ पी एच ए टी टी, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर, मात्स्यिकी कॉलेजों के संकाय सदस्यों, अनुसंधानकारों और देश के विभिन्न भागों के कॉलेजों के छात्रों ने अध्ययन दौरा, औद्योगिक दौरा और वॉक विथ स्कोलर कार्यक्रम के भाग के

डॉ. ट्रेवर प्लेट, विसिटिंग प्रोफसर, पी एम एल, प्लाइमाउथ, यु के के साथ छात्रों का आपसी विनियम

रूप में संस्थान का मुआइना किया। वर्ष 2015 के दौरान ए टी आइ सी, जहाँ संस्थान द्वारा विकसित

वैज्ञानिक-छात्र का आपसी विनियम सत्र

प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी की गयी है, का मुआइना किए गए आगंतुकों में पांच गुनी वृद्धि हुई है। आगंतुकों को विभिन्न प्रयोगशालाओं, जैवविविधता संग्रहालय, जलजीवशाला और प्रौद्योगिकी संग्रहालय का मुआइना करने का अवसर दिया गया और संस्थान की प्रौद्योगिकीय गतिविधियों और प्रौद्योगिकीय जानकारियों से अवगत कराया गया। संस्थान द्वारा तैयार किए गए चलचित्र और प्रकाशन संस्थान के संबंध में अतिरिक्त जानकारी प्रदान करने में सहायक हुये।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में छत्तीसगढ़ के कामधेनु विश्वविद्यालय के बी एफ एस सी अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए 17-19 फरवरी 2016 के दौरान 'मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन' विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। ए टी आइ सी ने महाराष्ट्र मात्स्यिकी सहकारी संघों

छत्तीसगढ़ के बी एफ एस सी छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

महाराष्ट्र के मात्स्यिकी सहकारी संघ के कार्यकारी सदस्यों के साथ वैज्ञानिकों का आपसी विनियम

(महाराष्ट्र राज्य मछीमार सहकारी संघ) के अध्यक्षों के लिए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और भा कृ अनु प-सी आइ एफ आर आइ के प्रभागाध्यक्षों के साथ 1 मार्च 2016 को हितधारक बैठक आयोजित की। मछुआरों ने समुद्री मछली पकड़ में कमी, तटीय प्रदूषण और अंतर्देशीय मछली उत्पादन पर डाटाबेस आदि समस्याओं के व्यावहारिक समाधान के लिए विशेषज्ञों के साथ आपसी विचार-विमर्श किया।

राजस्व

आगंतुकों के शुल्क (1.19 लाख रुपए) और उत्पादों के विपणन और सेवाओं (2.33 लाख रुपए) से वित्त वर्ष 2015-16 के दौरान कुल 3.52 लाख रुपए का राजस्व जगाया गया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के उत्पादों और सेवाओं से करीब 742 मछुआरे लाभान्वित हो गए।

(तैयारी: एन. अश्वती, ए टी आइ सी)

गणतंत्र दिवस समारोह

संस्थान मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय/अनुसंधान केन्द्रों में 26 जनवरी 2016 को गणतंत्र दिवस मनाया गया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में राष्ट्रीय झंडा फहराया। अपने भाषण में उन्होंने जिले में दाल की पैदावार का प्रचार करते हुए केन्द्र सरकार के दाल विकास कार्यक्रम में भाग लेने का सुझाव दिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र में गणतंत्र दिवस समारोह में डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक

उत्कृष्ट लेख पुरस्कार

डॉ. ग्रिनसन जोर्ज को यू जी सी और कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित न्यूमेरिकल मोडलिंग एंड साटलाइट रिमोट सेन्सिंग एज ए सरोगेट फोर आइडेन्टिफाइंग बयोमास फोर मराइन अक्वाटिक ओर्गानिसम ऑफ एम बी बी एस एल 2016 परिचर्चा ट्रैक III (टिकाऊ आजीविका) प्रस्तुतीकरण के लिए उत्कृष्ट लेख पुरस्कार प्राप्त हुआ।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने आइ ए आर आइ, पूसा, नई दिल्ली में 19-21 मार्च 2016 के दौरान आयोजित कृषि उन्नति मेला में भाग लिया।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, महानिदेशक, भा कृ अनु प और डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प कृषि उन्नति मेला में सी एम एफ आर आइ के स्टॉल में

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (ए टी आइ सी) ने निम्नलिखित प्रदर्शनियों में भाग लिया:

- अल हुदा पब्लिक स्कूल, पानायिकुलम, आलुवा में 18-19 जनवरी, 2016 को 'छात्रों की प्रतिभा के पोषण और तलाश' एन ई एस टी-2016
- एम ई एस अस्माबी कॉलेज, कोडुंगल्लूर, त्रिचूर में 21-26 जनवरी 2016 के दौरान प्रदर्शनी 'एस सी आइ ई एन टी आइ ए-16'
- भा कृ अनु प-सी पी सी आर आइ, कासरगोड के शताब्दी समारोह के सिलसिले में 12 मार्च, 2016 को किसान मेला और प्रदर्शनी

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र ने 25 जनवरी 2016 को वेरावल में आयोजित सागर खेदु प्रदर्शनी में भाग लिया। श्रीमती आनन्दीबेन पटेल, गुजरात मुख्य मंत्री, श्री बाबुभाइ बुकीरिया, कृषि मंत्री, सचिव (मात्स्यिकी) और गुजरात के मात्स्यिकी आयुक्त ने स्टॉल का मुआइना किया। उन्होंने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कार्मिकों और कर्मचारियों के साथ गुजरात तट पर पिंजरा मछली पालन की साध्यताओं पर आपसी विचार-विमर्श किया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने मात्स्यिकी कॉलेज, येक्कुरु, मंगलूरु द्वारा 4-6 मार्च 2016 के दौरान टी एम ए कन्वेन्शन सेन्टर, मंगलूरु में आयोजित मत्स्य मेला में भाग लिया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र ने गीता मट्रिकुलेशन हायर सेकन्डरी स्कूल, तूत्तुकुडी में 23 जनवरी, 2016 को आयोजित एक दिवसीय विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लिया।

कारवार अनुसंधान केन्द्र ने 8-10 जनवरी 2016 के दौरान आयोजित अक्वा गोवा मेगा फिश फेस्टिवेल में भाग लिया। इस दौरान श्रीमती सोनाली एस.एम., वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने 'खारा पानी पिंजरा मछली मालन' विषय पर भाषण दिया।

श्रीमती आनन्दीबेन पटेल, गुजरात मुख्य मंत्री भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ स्टॉल का मुआइना करने का दृश्य

भा कृ अनु प अंतर मेखला खेलकूद टूर्नामेन्ट

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की टीम ने भा कृ अनु प-सी ए इज़ेड आर आइ, जोधपुर, राजस्थान में आयोजित भा कृ अनु प अंतर मेखला खेलकूद टूर्नामेन्ट के निम्नलिखित प्रतियोगिताओं में हासिल की:

- जावलिन थ्रो (पुरुष): श्री ए.के. शाजी - तीसरा पुरस्कार
- बैड्मिन्टन (पुरुष): श्री ए.के. शाजी, श्री सी. जयकान्तन, श्री वी. राजेन्द्रन और श्री जस्टिन जोय (रनर्स अप)

जर्नल क्लब

जर्नल क्लब द्वारा निम्नलिखित भाषण आयोजित किए गए, जिनमें वैज्ञानिकों, तकनीकी कार्मिकों और अनुसंधानकारों ने भाग लिया

- डॉ. अनु कुमार, मुख्य वैज्ञानिक, सी एस आइ आर ओ, अडलैड, आस्ट्रेलिया द्वारा 5 जनवरी 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 'इको-टोक्सिकोलजी' विषय पर भाषण।
- डॉ. जोहन एच. विल्यम्स, विशेषज्ञ निदेशक, मात्स्यिकी एवं तटीय मामले, ओस्लो, नोर्वे ने नोरवीजियन मात्स्यिकी प्रबंधन विषय पर भाषण दिया।
- डॉ.नील अलूरु, वैज्ञानिक, जीवविज्ञान विभाग, वुड्स होल ओशियनोग्राफिक इन्स्टिट्यूशन, मस्साचुसेट्स ने 30 जनवरी 2016 को 'महासागर और मानव स्वास्थ्य: जलवायु परिवर्तन परिप्रेक्ष्य' विषय पर भाषण दिया।
- डॉ.आर.जयभास्करन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने 18 मार्च 2016 को भारत के दक्षिण पूर्व तट के मनप्पाड में छोटे पख वाले पाइलट व्हेल के बडे पैमाने में धंसन की अस्पष्टता विषय पर भाषण दिया।
- डॉ. वी. कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम डी, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने 23 मार्च 2016 को कहाँ गयी हमारी तारलियाँ (सारडीन) और क्यों हमें सारडीन इतना पसंद है विषय पर भाषण दिया।

(डॉ.श्याम एस.सलिम, जर्नल क्लब की रिपोर्ट)

संसदीय समिति निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने 19 जनवरी 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र के राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों का निरीक्षण किया। डॉ. सुनिल बलिराम गायकवाड़, सांसद ने बैठक की अध्यक्षता की। डॉ. महेन्द्रनाथ पान्डेय, सांसद, समिति सचिवालय के सुश्री अभिलाषा मिश्रा, हिन्दी अधिकारी और श्री निखिल चोपड़ा, वरिष्ठ अनुवादक भी बैठक में उपस्थित थे। भा कृ अनु प से डॉ.प्रवीण पुत्रा, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), श्रीमती सीमा चोपड़ा, उप निदेशक (राजभाषा) और श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने बैठक में भाग लिया। संस्थान के प्रतिनिधियों के रूप में डॉ. पी. विजयगोपाल, प्रधान वैज्ञानिक, श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्रीमती ई.के. उमा, ए सी टी ओ (हिन्दी), श्री के. मोहम्मद कोया, प्रभारी वैज्ञानिक, वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र, श्री चन्द्र मौली शर्मा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी भी बैठक में उपस्थित थे। निरीक्षण बैठक के दौरान समिति ने राजभाषा के प्रचार में संस्थान द्वारा किए जाने वाले प्रयासों के साथ साथ अनुसंधान के क्षेत्र, विशेषत: खुला सागर पिंजरा मछली पालन में उठाए जाने वाले कदमों की सराहना की।

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में संसदीय राजभाषा समिति, भा कृ अनु प और संस्थान के प्रतिनिधियों का दृश्य

राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी

अनुसंधान के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग के प्रचार और अनुसंधान गतिविधियों का हिन्दी में विकीर्णन करने के उद्देश्य से भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोच्ची में 9 मार्च 2016 को एक दिवसीय राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गयी। संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों और अन्य मात्स्यिकी संस्थानों के वैज्ञानिकों ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी में कुल 25 लेख प्रस्तुत और पोस्टर के रूप में प्रदर्शित किए गए।

श्री अभय कुमार सिंह, आयकर आयुक्त (अपील), कोच्ची संगोष्ठी में मुख्य अतिथि रहे। उद्घाटन सभा में डॉ. आर. नारायणकुमार अध्यक्ष रहे। इस अवसर पर श्रीमती बिन्दु पी.वी., उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, श्रीमती ई.के. उमा, ए सी टी ओ (हिन्दी) और डॉ. इमेल्डा जोसफ, प्रभारी अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने भाषण दिए।

डॉ. गुल्शद मोहम्मद, डॉ. वी.पी. विपिनकुमार और डॉ. श्याम एस. सलिम ने उत्कृष्ट लेख के प्रस्तुतीकरण के लिए पुरस्कार जीत लिए। डॉ. इमेल्डा जोसफ, डॉ. जोसलीन जोस और डॉ. विद्या जयशंकर को उत्कृष्ट पोस्टर के पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

मुख्य अतिथि श्री अभय कुमार सिंह द्वारा भा कृ अनु प- विशेष प्रकाशन (हिन्दी) का लोकार्पण करने का दृश्य

राजभाषा निरीक्षण

श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने 6 जनवरी 2016 को विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र, 8 फरवरी 2016 को कारवार अनुसंधान केन्द्र और 10 फरवरी 2016 को मांगलूर अनुसंधान केन्द्र के राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया।

रा भा का स बैठकें

मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 07 जनवरी 2016 को डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में अक्तूबर-दिसंबर 2015 की अवधि के राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की गयी और आगे की प्रगति के लिए सुझाव दिए गए। मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में 2 जनवरी 2016 को तिमाही बैठक का आयोजन किया गया।

डॉ. जॉन एच विलियम्स, नोर्वे का भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में दौरा

डॉ. जॉन एच विल्यम्स भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के निदेशक और प्रभागों के अध्यक्षों के साथ

डॉ. जोहन एच विल्यम्स, विशेष निदेशक, विपणन, उद्योग और मात्स्यिकी का नोरवीजियन मंत्रालय और अध्यक्ष, उत्तर पूर्व अटलान्टिक मात्स्यिकी आयोग ने 16 जनवरी 2016 को संस्थान का दौरा किया। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के विभिन्न प्रभागों के अध्यक्षों ने उनका स्वागत किया। इसके बाद आयोजित बैठक में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और समुद्री अनुसंधान संस्थान, नोरवीजियन पशुचिकित्सा संस्थान जैसे नोरवीजियन एजेन्सियों के साथ संयुक्त रूप से अनुसंधान कार्यविधियों की साध्यता पर चर्चा की गयी। डॉ. जॉन एच विलियम्स और टीम को 1960 के वर्षों में कार्यान्वयन की गयी इन्डो-नोरवीजियन परियोजना (आइ एन पी) के स्थान का मुआइना करने की सुविधा दी गयी।

मात्स्यिकी एवं जलकृषि में सहकारिता पर चतुर्थ इन्डो-नोरवीजियन कार्य दल की कार्यसूची के भाग के रूप में डॉ. विलियम्स ने 'नोरवीजियन मात्स्यिकी प्रबंधनः बेहतरीन संतुलन' विषय पर भाषण दिया। इसमें केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ), राष्ट्रीय मछली आनुवंशिक ब्यूरो (भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर) का प्रायद्वीपीय और समुद्री मछली आनुवंशिक संपदा (पी एम बी एफ जी आर) केन्द्र, केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी), कोच्ची, केन्द्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा कृ अनु प-सी आइ एफ आर आइ) और कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सी यु एस ए टी) के समुद्र विज्ञान विभाग के कुल 131 वैज्ञानिकों और अनुसंधानकारों ने भाग लिया।

- भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के परामर्श के अंदर कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला में चालू किए जाने वाले एफ आइ एम एस यु एल-कार्यक्रम-खुला सागर पिंजरा मछली पालन स्थान पर विश्व बैंक के टीम ने निरीक्षण किया। कार्मिकों में श्री मार्टिन एस. कुमार और डॉ. बी.एन. कृष्णमूर्ति (विश्व बैंक): और मात्स्यिकी विभाग से श्री मोहनसुन्दरम, अतिरिक्त निदेशक (मात्स्यिकी), श्री जूड आमस्ट्रोंग और श्री जूलियस एड्वेर्ड सम्मिलित थे।

विश्व बैंक टीम खुला सागर पिंजरा मछली पालन ग्रुपों के साथ आपसी विचार विमर्श करते हुए

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में आगंतुक

- डॉ. एस.डी. सिंह, भूतपूर्व सहायक महानिदेशक (अंतःस्थलीय मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, नई दिल्ली - 8 जनवरी 2016
- डॉ. आस्फा यासिन, प्रोफसर एवं अध्यक्ष, सेन्टर फोर इन्टरनेशनल रिलेशन्स, पी एस एस सी आइ यु ई, एन सी ई आर टी, भोपाल - 13 जनवरी 2016
- श्री डेविड एस. बोक्सर, पर्यावरण, जलवायु एवं विज्ञान एकक का मुख्य, यु एस दूतावास, नई दिल्ली और सुश्री प्रिया घोसे, पर्यावरण विशेषज्ञ - 11 फरवरी 2016
- श्री छबिलेन्द्र राऊल, आइ ए एस, अपर सचिव (डेयर), एवं सचिव, भा कृ अनु प, नई दिल्ली - 5 मार्च 2016

चेन्नई में नेत्र एवं दंत चिकित्सा कैंप

मद्रास अनुसंधान केन्द्र के मनोरंजन क्लब ने 8 जनवरी 2016 को चेन्नई में नेत्र एवं दंत चिकित्सा कैंप आयोजित किया। वासन डेन्टल एंड आइ केयर होस्पिटल प्रा. लिमिटड द्वारा आयोजित कैंप में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और भा कृ अनु प-सी आइ बी ए दोनों से कुल 78 कर्मचारियों ने भाग लिया। सदस्यों ने काक्कुम करंगल अनाथालय ग्रुप द्वारा चेन्नई के बाढ़ ग्रस्त लोगों को पुराने और नए कपड़े दान दिए।

महिला दिवस समारोह

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में 5 मार्च 2016 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस सिलसिले में परिवार, कार्य स्थान और समाज में महिलाओं की भूमिका विषय पर डॉ. जाय्स तिलगम, (सेवानिवृत्त मेडिकल अफसर, चेन्नई कार्पोरेशन) ने भाषण दिया।

क्लब दिवस समारोह

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में क्लब दिवस समारोह का आयोजन

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 26 जनवरी, 2016 को कर्मचारी सदस्यों और बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के नृत्य, ललित गान और खेलकूद के साथ क्लब दिवस मनाया गया।

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में निदेशक का मुआइना

- डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने 23 फरवरी 2016 को भा कृ अनु प-मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में समुद्री रीफ जलजीवशाला, आर ए एस और स्फुटनशाला सुविधाओं का निरीक्षण किया।

मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1954 से लेकर प्रमुख इंडियन जर्नल

ISSN 0970-6011

वार्षिक चंदा ₹ 1000 $ 100

निदेशक, सी एम एफ आर आइ

कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें

इन्टरनेशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.195

एन ए ए एस रेटिंग 6.2

भा कृ अनु प-कृ वि कें द्वारा *पोक्काली* मछली के लिए फार्म गेट बाज़ारों का निदर्शन

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक मछुआरों के तत्वावधान में पोक्काली मछली बिक्री का उद्घाटन करते हुए

पालनकारों को बेहत्तर आय प्रदान करने वाली पौष्टिकता युक्त और प्राकृतिक जैविक पोक्काली मछली का प्रचार करने हेतु कषि विज्ञान केन्द्र ने 26 मार्च 2016 को कडमक्कुडी के 4 स्थानों में 'फार्म गेट बाज़ारों' का प्रदर्शन किया। कडमक्कुडी ग्राम पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शालिनी बाबु और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया। जीवित मछलियों को बिना बिचौलियों के सीधे उपभोक्ताओं को उचित कीमत पर बेचा गया ताकि मछुआरों को अधिक लाभ मिल सके। करीब 2000 लोगों ने फार्म गेट बाज़ारों का मुआइना किया।

जी आइ एफ टी तिलापिया पालन का निदर्शन

श्री षाजु वी. तेक्केकरा, करुकुट्टी पंचायत का अध्यक्ष मछली संग्रहण मेला का उद्घाटन करते हुए

अंगमाली के करुकुट्टी के ग्रेनाइट के खदान में मात्स्यिकी विभाग से उचित लाइसेन्स प्राप्त करके लघु पैमाने के पिंजरों में जी आइ एफ टी तिलापिया के पालन का निदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र ने छात्रों युवाओं और पालनकारों को पालन से संबंधित जानकारी दी। करुकुट्टी पंचायत के अध्यक्ष श्री षाजु वी. तेक्केकरा द्वारा उद्घाटन किए गए इस कार्यक्रम की प्रौद्योगिकी का प्रचार करने हेतु 23 मार्च 2016 को मछली संग्रहण मेला आयोजित किया गया। छः महीने की पालन अवधि के दौरान मछली का भार 350 ग्राम था और अतिजीवितता दर 80% थी।

जैविक खेती के लिए उत्पादों का लाँचिंग

श्री एस. शर्मा, विधान सभा सदस्य ने 5 दिसंबर 2015 को एरणाकुलम के पल्लिपुरम में कृषि विज्ञान केन्द्र के उत्पाद न्यूट्रीस्लरी का लाँचिंग किया। स्लरी गोबर, नीम की खली और मुँगफली खली का निश्चित अनुपात में किण्वन किया गया ओर्गानिक टोनिक है, जो मिट्टी में सूक्ष्म सस्य और जैविक पदार्थ हाने में सहायक है और 5 लिटर के पैक में बेचा जाता है। पांच लिटर पानी में इस टोनिक को पतला करके पौधों में प्रयुक्त किया जा सकता है। यह उत्पाद सी एम एफ आर आइ ए टी आइ सी/कृ वि कें के बिक्री काउन्टर से बेचा जाता है।

श्री एस. शर्मा, एम एल ए मिट्टी जीर्णोद्धार जैविक टोनिक न्यूट्रीस्लरी का उद्घाटन करते हुए

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 10 मार्च 2016 को आयोजित कार्यक्रम में पौधों की जडों और पत्तों में प्रयुक्त करने लायक वर्मीकम्पोस्ट, पौष्टिकता समृद्ध गोबर और गोमूत्र जैसे जैविक उत्पादों, जैविक कीटनाशकों (नन्मा, मेन्मा, शक्ति और श्रेया) का लाँचिंग डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा किया गया।

जिले में जैविक खेती करने वालों को गुणता

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक कृ वि कें के नए उत्पादों का विमोचन करते हुए

जे के एम ई विसिटिंग कार्ड

युक्त खेती निवेश को उपलब्ध कराने के उद्देश से जीवा कुटुम्बश्री माइक्रो एन्टरप्राइस-महिला संयुक्त दायित्व ग्रुप (जे एल जी) कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रौद्योगिकी के आधार पर नीम की खली, कास्टर की खली, वर्मीकम्पोस्ट, स्प्रे करने योग्य नीम तेल, ग्रो बैग, ग्रो बैग मिश्रण आदि का निर्माण और विपण करता है। यह व्यापार इकाई मषुवण्णूर ग्राम पंचायत के ऐरापुरम गाँव में 23 फरवरी 2016 से लेकर प्रारंभ की गयी।

पूर्व-रबी अवगाह अभियान का आयोजन

एरणाकुलम में अग्री-होर्टीकल्चर सोसाइटी के सहयोग से 2-10 जनवरी 2016 के दौरान पूर्व-रबी जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। कृषि मंत्रालय के निर्देश के अनुसार देश के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा इस अवधि के दौरान पूर्व-रबी जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इस दौरान पोस्टरों, पुस्तिकाओं और कृ वि कें के उत्पादों द्वारा कृषि और इस से जुड़े हुए क्षेत्र में एरणाकुलम जिले के लिए प्रासंगिक प्रौद्योगिकियों का प्रचार प्रसार किया गया। एक सप्ताह के इस कार्यक्रम में करीब 35,000 किसानों और 450 विस्तार कार्मिकों ने कृ वि केन्द्र के स्टॉल का दौरा किया।

नवोन्मेषी किसान को मान्यता

श्री सच्चिदानन्दन वेलियत, जो एरणाकुलम जिले के उत्तर अड्वाशेरी के 65 वर्ष की आयु का किसान है, को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा कृ अनु प) का नवोन्मेषी किसान पुरस्कार प्राप्त हुआ। नई दिल्ली में 21 मार्च 2016 को आयाजित कृषि उन्नति मेला में माननीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह से उन्होंने पुरस्कार ग्रहण किया। जायफल का छिलका उतारने के यंत्र के निर्माण के लिए उनको पुरस्कार प्राप्त हुआ।

श्री सच्चिदानन्दन नवोन्मेषी किसान पुरस्कार 2015-16 स्वीकार करते हुये

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों (परिवीक्षाधीन) के लिए राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (एन ए ए आर एम), हैदराबाद में उनके कृषि अनुसंधान सेवा का बुनियादी पाठ्यक्रम (एफ ओ सी ए आर एस) के भाग के रूप में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा नायरम्बलम में 8 से 28 फरवरी 2016 के दौरान 21 दिनों का फील्ड अनुभव प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस सिलसिले में 22 फरवरी 2016 को आयोजित कार्यक्रम में उनके अनुसंधान खोजों के बारे में किसानों को विवरण दिया गया। नायरम्बलम पंचायत अध्यक्ष श्री ई. पी. षिबु ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। पंचायत के सदस्यों, लाइन विभाग के कार्मिकों और कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्मिकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

- **डॉ. ए. गोपालकृष्णन,** निदेशक ने महानिदेशक, भा कृ अनु प की अध्यक्षता में राष्ट्रीय समुद्री नीति के प्रारूप पर सुझाव देने के लिए गठित समिति की दिनांक 21 जनवरी 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और भा कृ अनु प संस्थानों के निदेशकों के लिये 22-24 जनवरी 2016 को आयोजित वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।

  उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प द्वारा 25 जनवरी 2016 को आयोजित मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के निदेशकों की बैठक में भाग लिया।

  कुट्टनाड के मंकोम्पु में 6 फरवरी 2016 को आयोजित समुद्री सतह से नीचे की खेती के लिये अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र के उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया।

  विशाखपट्टणम में राष्ट्रीय मात्स्यिकी नीति 2016 के संबंध में 11 फरवरी 2016 को आयोजित हितधारकों की बैठक में भाग लिया।

  कृषि भवन, नई दिल्ली में 26-27 फरवरी 2016 को आयोजित राष्ट्रीय मात्स्यिकी नीति की बैठक में भाग लिया।

  माननीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और केरल के मछुआरों के प्रतिनिधियों की कृषि भवन, नई दिल्ली में 2 मार्च 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  परंपरागत मछुआरों को गहरे समुद्र में मत्स्यन परिचालन करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए माननीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और तटीय राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के मात्स्यिकी विभागों और मात्स्यिकी संस्थानों / संगठनों के साथ कृषि भवन, नई दिल्ली में 9 मार्च 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. के. एस. मोहम्मद,** अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने के यु एफ ओ एस और एन ई आर सी आइ द्वारा “टिकाऊ नीली आर्थिकता: उत्पादन, कार्यनीति और नीति-TaSBE 2016” पर 6 फरवरी 2016 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और पारिस्थितिकी पर आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन विषय पर आमंत्रित भाषण दिया।

  केरल स्वतंत्र मत्स्य तोषिलाली यूनियन द्वारा 14 जनवरी 2016 को तोप्पुमपडी, कोच्ची में “राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति-2016” पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

  राष्ट्रीय समुद्री नीति का प्रारूप पर सुझाव देने के लिए गठित समिति की दिनांक 21 जनवरी 2016 और 26-27 फरवरी 2016 को आयोजित बैठकों में भाग लिया।

  राष्ट्रीय मात्स्यिकी नीति 2016 के संबंध में चर्चा करने के लिए 9 फरवरी 2016 को मद्रास अनुसंधान केन्द्र और 11 फरवरी 2016 को विशाखपट्टणम में आयोजित हितधारकों बैठकों में भाग लिया।

  माननीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और केरल के मछुआरों के प्रतिनिधियों की कृषि भवन, नई दिल्ली में 2 मार्च 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  परंपरागत मछुआरों को गहरे समुद्र में मत्स्यन परिचालन करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए माननीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और तटीय राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के मात्स्यिकी विभागों और मात्स्यिकी संस्थानों/ संगठनों के साथ कृषि भवन, नई दिल्ली में 9 मार्च 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. वी. कृपा,** अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और डी बी टी द्वारा 18 फरवरी 2016 को कोच्ची में तटीय जनता की आजीविका सुरक्षा के लिए समुद्री शैवालों का समुद्री संवर्धन, उपयोगिता और मूल्य वर्धन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परामर्श बैठक में भाग लिया।

  भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 29 फरवरी 2016 को आयोजित 79 वीं संस्थान प्रबंध समिति की बैठक में भाग लिया।

  भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी की 10 मार्च 2016 को आयोजित संस्थान प्रबंध समिति की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. पी.यु. ज़क्करिया,** अध्यक्ष, डी एफ डी ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी नीति 2016 के संबंध में चर्चा करने के लिए 25 जनवरी 2016 को मुम्बई अनुसंधान केन्द्र और 9 फरवरी 2016 को मद्रास अनुसंधान केन्द्र में आयोजित हितधारकों की परामर्श बैठकों में भाग लिया।

  रेडीसन ब्लू होटल, कोच्ची में के यु एफ ओ एस और एन ई आर सी आइ द्वारा “टिकाऊ नीली आर्थिकता: उत्पादन, कार्यनीति और नीति-TaSBE 2016” पर 5 फरवरी 2016 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और ‘जलवायु परिवर्तन की ओर भारतीय समुद्री मात्स्यिकी के प्रभाव, अनुकूलन और शमन के विकल्प’ विषय पर आमंत्रित भाषण दिया।

  सी एस आइ आर-एन आइ ओ, कोच्ची में जलवायु परिवर्तन के लिए प्रौद्योगिकी विकास और प्रयोग विषय पर 15 माच 2016 को आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में ‘समुद्री मात्स्यिकी पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव’ विषय पर भाषण दिया।

- **डॉ. पी. लक्ष्मीलता,** प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केन्द्र ने चेन्नई स्थित भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण (एफ एस आइ) के परामर्श ग्रुप की 6 जनवरी 2016 को आयोजित XXIII वीं बैठक में भाग लिया।

  मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, चेन्नई में 6 जनवरी 2016 को आयोजित एफ आइ एम एस यु एल II परियोजना की दूसरी राज्य स्तरीय तकनीकी समिति बैठक (एस एल टी सी) में भाग लिया।

  अण्णा विश्वविद्यालय, चेन्नई में ‘तमिल नाडु में एकीकृत तटीय मेखला प्रबंधन’ विषय पर 12 जनवरी 2016 को आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

  आइ आइ एस सी, बंगलूरु में ‘फ्रान्स और भारत के बीच समुद्री जीवविज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी में सहकारिता की साध्यताओं की खोज’ विषय पर 7-9 मार्च 2016 के दौरान आयोजित इन्डो-फ्रेन्च कार्यशाला में भाग लिया।

  फोरम फोर इंडियन डेवलपमेन्ट कोओपरेशन, नई दिल्ली, बंगाल उपसागर कार्यक्रम, चेन्नई

और मद्रास इन्स्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेन्टल स्टडीस, चेन्नई द्वारा संयुक्त रूप से 15 मार्च, 2016 को चेन्नई में आयोजित दक्षिण क्षेत्रीय परामर्श (एस आर सी) में भाग लिया।

- **डॉ. जी. महेश्वरुडु,** अध्यक्ष, सी एफ डी ने संसदीय कृषि समिति द्वारा 18-19 जनवरी 2016 के दौरान कोच्ची में किए गए अध्ययन दौरे के संपर्क अधिकारी (नोडल पोइन्ट-भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ) के रूप में काम किया।

- **डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह,** प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने हिन्दी राजभाषा समिति (न रा का स), मुम्बई (उत्तर) के कार्यालयों के क्षेत्रीय अध्यक्षों के साथ 24 फरवरी 2016 को आयोजित 18 वीं छःमाही बैठक में भाग लिया।

  पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली में 29 फरवरी, 2016 को आयोजित राष्ट्रीय तटीय मेखला प्रबंधन प्राधिकरण (एन सी इज़ेड एम ए) की 30 वीं बैठक में भाग लिया।

  भारतीय कृषि कुशलता परिषद, गुड़गांव द्वारा मात्स्यिकी सेक्टर में पेशेवर नक्शा और रोज़गार सूची की सामग्री पर चर्चा करने के लिए 13 जनवरी 2016 को भा कृ अनु प-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान में आयोजित क्यु पी-एन ओ एस (योग्यता पैक्स और राष्ट्रीय पेशेवर स्तर) की बैठक में आमंत्रित विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

  तारापोरवाला जलजीवशाला, मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, महाराष्ट्र सरकार, मुम्बई में 05 मार्च, 2016 को आयोजित जलजीवशाला नवीकरण की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. प्रतिभा रोहित,** प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने आइ ओ टी सी संकल्पों के कार्यान्वयन की निगरानी और पुनरीक्षण के लिए गठित कार्य दल की दिनांक 8 जनवरी, 2016 को कृषि भवन, नई दिल्ली में आयोजित बैठक में भाग लिया।

  राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति के प्रारूप पर प्रतिक्रिया जानने के लिए सी आइ एफ एन ई टी, कोच्ची में 3-4 फरवरी, 2016 को आयोजित केरल और कर्नाटक के हितधारकों की बैठक में भाग लिया।

  आरण्य भवन, मल्लेश्वरम, बंगलूरु में 26 फरवरी 2016 को समुद्री आवास तंत्र से संबंधित परियोजनाओं की अनुवीक्षण समिति के विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

  लक्षद्वीप में एस ए टी टी यू एन ए परियोजना के अंदर 14-16 मार्च 2016 के दौरान आयोजित ट्यूना टैगिंग कार्यक्रम में भाग लिया।

- **डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु** और **डॉ. सुजिता तोमस,** (प्रधान वैज्ञानिक गण) ने सी एस आइ आर-राष्ट्रीय महासागर विज्ञान, डोना पॉला, गोवा में 17-18 फरवरी 2016 को आयोजित टिकाऊ हिन्द महासागर बायोजियो केमिस्ट्री और पारितंत्र अनुसंधान कार्यक्रम की मध्यावधि पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. पी.एस. स्वातिलक्ष्मी,** प्रधान वैज्ञानिक कासरगोड में 12 मार्च 2016 को आयोजित भा कृ अनु प-सी पी सी आर आइ शताब्दी समारोह में भाग लिया और सी एम एफ आर आइ का प्रदर्शनी स्टॉल आयोजित किया।

  मात्स्यिकी कॉलेज, मंगलूरु में 21 मार्च 2016 को आयोजित तकनीकी समिति बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. पी. लक्ष्मीलता, डॉ. ए. मार्ग्रट मुत्तुरतिनम, डॉ. जो के. किषकूडन** (प्रधान वैज्ञानिक गण)**, डॉ. विद्या जयशंकर,** वरिष्ठ वैज्ञानिक, **श्रीमती हेमशंकरी, डॉ. आर. गीता, सुश्री इन्दिरा दिविपाला** और **सुश्री ई.एम. चन्दप्रज्ञदर्शिनी,** वैज्ञानिक गण ने फिशरीस टेक्नोक्रेट फोरम (एफ टी एफ) और भा कृ अनु प-सी आइ बी ए, चेन्नई द्वारा 16 मार्च, 2016 को भारत में नए रूप से पालित मछलियों के विपण की कार्यनीति विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र,** प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र और **डॉ. बी. जोनसन,** वैज्ञानिक ने डी बी टी-सी एम एफ आर आइ द्वारा 18 फरवरी 2016 को कोच्ची में तटीय जनता की आजीविका सुरक्षा के लिए समुद्री शैवालों का समुद्री संवर्धन, उपयोगिता और मूल्य वर्धन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परामर्श बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र** ने चेन्नई में 16 मार्च, 2016 को 'भारत में नए रूप से पालित मछलियों के विपण की कार्यनीति' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाषण दिया।

- **डॉ. बी. जोनसन,** वैज्ञानिक ने रिलायन्स फाउन्डेशन द्वारा 25 जनवरी 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, रामनाथपुरम में आयोजित 'ज्ञान मेला' में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

  यूनिवर्सिटी बिसिनस कोलाबोरेशन सेन्टर, अलगप्पा विश्वविद्यालय, कारैकुडी द्वारा 26 फरवरी 2016 को 'समुद्री शैवाल पालन और इससे जुडे हुए उद्योग' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और भाषण दिया।

- **डॉ. आर. शरवणन,** वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम में 7 जनवरी 2016 को आइ एफ एस के 61 वें बैच के प्रशिक्षणार्थियों के लिए भाषण दिया।

- **कुमारी एल. रम्या,** वैज्ञानिक ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली और कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्ची द्वारा 21 और 22 मार्च, 2016 को 'टिकाऊ आजीविका के लिए समुद्री जैवविविधता और जैवपूर्वेक्षण' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

- **डॉ. जी. महेश्वरुडु, डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै** (प्रधान वैज्ञानिक गण) और **डॉ. रेखादेवी चक्रबर्ती,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी आइ एफ एन ई टी, कोच्ची में 2 फरवरी, 2016 को एन एम ई पी पर आयोजित हितधारकों की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. पी. कलाधरन,** प्रधान वैज्ञानिक ने जलीय जीव स्वास्थ्य का राष्ट्रीय केन्द्र, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्ची द्वारा 1-3 फरवरी 2016 को 'समुद्री जीवविज्ञानीय व्यवस्थाओं से औरषध और जैव-ईंधन-स्थिति,

समस्याएं और आगे का रास्ता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परामर्श में भाग लिया।

जलीय संपदाएं-भीषण और परिप्रेक्ष्य एन एस ए आर टी पी-2016 पर नागरकाविल में 8 फरवरी 2016 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

सावंत कृषि विद्या पीठ, धाबोल, रत्नगिरी में 5 मार्च 2016 को आयोजित जी ओ एम-जी आइ इज़ेड-सी एम पी की निदर्शन कार्यशाला में भाग लिया और प्लास्टिक से मैंग्रोवों का संरक्षण विषय पर प्रस्तुतीकरण किया।

चेरवत्तूर में 22 मार्च, 2016 को आयोजित मलबार शंबु पालनकारों की बैठक में भाग लिया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 9 मार्च, 2016 को आयोजित राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी में भाग लिया।

- **डॉ. आर. जयभास्करन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने मुख्य वन संरक्षक, मैंग्रोव सेल एवं नोडल अधिकारी, यू एन डी पी सिन्धुदुर्ग परियोजना, महाराष्ट्र द्वारा मुम्बई और मालवन में 25 फरवरी-3 मार्च 2016 के दौरान 'सीटेशियनों की निगरानी और अनुसंधान तरीकाएं' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में 'भारत और समीपस्थ समुद्रों की समुद्री स्तनियाँ' विषय पर भाषण दिया।

  पर्यावरण एवं वन विभाग के वन्य जीव विंग, तमिल नाडु द्वारा रामनाथपुरम, तमिल नाडु में 22 मार्च 2016 को 'ड्यूगोंग संरक्षण' विषय पर आयोजित कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और 'ड्यूगोंग बचाव और पुनर्वास' विषयक भाषण दिया।

- **डॉ. जो के. किषकूडन,** प्रधान वैज्ञानिक ने एन एफ डी बी, हैदराबाद में 25-26 फरवरी 2016 के दौरान आयोजित क्षमता वर्धन निर्वाचिका सभा में संस्थान के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

  कोवलम में 2 मार्च, 2016 को मछुआरा-किसान-वैज्ञानिक मेला का आयोजन किया और अध्यक्षता की।

  भारत को नामित आस्ट्रेलियन उच्च आयुक्त द्वारा 7 मार्च, 2016 को हयात रीजेन्सी, चेन्नई में आयोजित 'नीली आर्थिकता' लाँचिंग में भाग लिया।

  'भारत के उत्तर पश्चिम तट में कृत्रिम भित्ति के रूप में ओइल एंड प्लाटफोर्म डीकमीशनिंग और उपयोगिता' विषयक परामर्श परियोजना के सिलसिले में 8 मार्च 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में ब्रिटीश गैस (बी जी) एनर्जी होल्डिंग लिमिटड, यु के के कार्मिकों के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।

  पुतुच्चेरी और कारैकल तट पर कृत्रिम भित्ति के विनियोजन से संबंधित परामर्श परियोजना प्रस्ताव पर पुतुच्चेरी मात्स्यिकी निदेशक के साथ 12 मार्च 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. पी.पी. मनोजकुमार** और **डॉ. पी.एस. आशा,** प्रधान वैज्ञानिकों ने तूत्तुकुडी जिलाधीश के कार्यालय में 26 फरवरी 2016 को आयोजित जिला तटीय मेखला प्रबंधन प्राधिकरण की 62 वीं बैठक में भाग लिया।

- **डॉ.पी.पी.मनोजकुमार,** प्रभारी वैज्ञानिक, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र, **श्री एल.रंजित,** वैज्ञानिक, **श्री एन.जेसुराज,** तकनीकी अधिकारी, **श्री एस.शेखर वी.रायर,** वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने 16 मार्च 2016 को सिप्पिकुलम में समुद्री संवर्धन पर गुणभोक्ताओं की बैठक का आयोजन किया।

- **डॉ. पी.पी. मनोजकुमार,** प्रभारी वैज्ञानिक, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र, **श्री एल. रंजित,** वैज्ञानिक, **श्री के.पी. कंतन,** तकनीकी सहायक ने 20 मार्च 2016 को कन्याकुमारी जिला के आरोकियापुरम में अयंत्रीयकृत मछुआरों के हितधारकों की बैठक का आयोजन किया।

- **डॉ. श्याम एस. सलिम** ने टिकाऊ तटीय प्रबंधन का राष्ट्रीय केन्द्र (एन सी एस सी एम), चेन्नई में 16-17 फरवरी 2016 को ई एस ए पर तटीय समुदाय की निर्भरत विस्तार का निर्धारण-सी वी सी ए के सीमांकन की ओर कदम पर आयोजित पुनरीक्षण बैठक और विशेषज्ञ परामर्श में भाग लिया।

  सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एम ओ एस पी आइ), भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित परियोजना की 12 फरवरी 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  एस ए एम ई टी आइ, तिरुवनंतपुरम में कृषि और इससे जुड़े हुए विभागों के कार्मिकों और वैज्ञानिकों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय विपणन करार और मात्स्यिकी सेक्टर: भारत से सबक' विषय पर भाषण दिया।

  ले मेरिडियन होटल में 20 जनवरी 2016 को आयोजित संसदीय कृषि स्थायी समिति की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. रितेश रंजन** ने एन ए एस सी, नई दिल्ली में एन बी एस एफ ए आर ए परियोजना 'हिल्सा (*टेनुलोसा इलीशा*) के स्टॉक विशेषीकरण, स्फुटनशाला में प्रजनन, संतति उत्पादन और पालन' की वार्षिक पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

- **श्रीमती ई.के. उमा,** सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी अनुवादक) और **श्रीमती वन्दना वी.**, तकनीकी सहायक (हिन्दी अनुवादक) ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 19 फरवरी, 2016 को इन्टरनेशनल होटल, कोच्ची में आयोजित एक दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया।

- **सुश्री सलोनी शिवम,** वैज्ञानिक और **श्री एन.जी. वैद्या**, तकनीकी अधिकारी ने कारवार न रा का स की 18 मार्च, 2016 को आयोजित छ: माही बैठक में भाग लिया।

- **श्री के. जेराल्ड राजा,** उच्च श्रेणी लिपिक और **श्रीमती आर. अनंतराणी**, निम्न श्रेणी लिपिक ने हेवी वाटर प्लान्ट, तूत्तुकुडी में 18 और 19 फरवरी, 2016 को आयोजित न रा का स की कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. सी.पी. सुजा,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने हेवी वाटर प्लान्ट, तूत्तुकुडी में 3 मार्च, 2016 को आयोजित हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी में भाग लिया।

कार्यशाला / प्रशिक्षण / सम्मेलन आदि	तारीख एवं स्थान	भागीदार
'एशिया और हिन्द महासागर में क्षेत्रीय महासागर शासन ढांचा, समुद्र के नियम और इसके संबंधित उपाय पर संघ राष्ट्र सम्मेलन के कार्यान्वयन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	28 फरवरी - 19 मार्च 2016, अंतर्राष्ट्रीय महासागर संस्थान (आइ ओ आइ), फुकेत, थायलान्ड	श्री के. मोहम्मद कोया, वैज्ञानिक
'महिला वैज्ञानिकों के लिए सामान्य प्रबंधन कार्यक्रम'	25 जनवरी से 5 फरवरी 2016 ए एस सी आइ, हैदराबाद	डॉ. जोसलीन जोस, प्रधान वैज्ञानिक
मराइन स्टिवार्डशिप का क्षमता वर्धन कार्यक्रम	7-11 मार्च, 2016, कोच्ची	डॉ. जोसलीन जोस और डॉ. गीता शशिकुमार (प्रधान वैज्ञानिक गण)
जलकृषि में जीनोमिक्स पर परिचर्चा	28-30 जनवरी, 2016 भा कृ अनु प-सी आइ एफ ए, भुवनेश्वर	श्री एम. शंकर, वैज्ञानिक डॉ. एम.पी. पोल्टन, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
पानी की गुणता परीक्षण में आधुनिक उपकरणों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण	11-15 जनवरी, 2016 एन आइ एच, रूरकी	सुश्री लावण्या एस., तकनीकी सहायक
ऑटो कैड, रेविट आर्किटेक्चर और संरचनात्मक विश्लेषण और डिज़ाइन (एस टी ए ए डी)	कैड सेन्टर रामनाथपुरम	श्री मेन्डोन्सा सेवियर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
गृहांदर प्रशिक्षण / कार्यशालाएं	**तारीख एवं स्थान**	**भागीदार**
स्टॉक निर्धारण के लिए कठोर भाग उपयुक्त करके मछली का आयु निर्धारण	2-5 फरवरी, 2016 भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. के.एम. राजेश (वरिष्ठ वैज्ञानिक) सुश्री रम्या एल., श्रीमती सूर्या, वैज्ञानिक गण
एन आइ सी आर ए कार्यशाला	8-11 मार्च, 2016 भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	डॉ. पी.यु. ज़क्करिया, डॉ. प्रतिभा रोहित डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु, डॉ. सुजिता तोमस डॉ. के.एम. राजेश, डॉ. एम. शिवदास डॉ. शुभदीप घोष, डॉ. के.वी. अखिलेश डॉ. ज्ञान रंजन दास, श्री के. मोहम्मद कोया डॉ. जे.के. शोभा, डॉ. यु. गंगा डॉ. टी.एम. नजमुदीन, सुश्री इन्दिरा दिविपाला
विज्ञान में दर्शन, तरीका और नीति पर आपसी सह-शिक्षा पर कार्यशाला	27-29 जनवरी, 2016 विषिंजम अनुसंधान केन्द्र 19-21 जनवरी, 2016 टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	डॉ. आर. विद्या, वैज्ञानिक डॉ. आर. शरवणन, डॉ. अमीर कुमार शामल डॉ.एन.एस.जीना, श्री एस.चन्द्रशेखर, सुश्री एस.सूर्या सुश्री रम्या अभिजित और सुश्री एल. रम्या (वैज्ञानिक गण)
समुद्री मात्स्यिकी विश्लेषण के लिए जियोमीडिया सोफ्टवेयर का उपयोग	21-22 जनवरी, 2016 विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	डॉ. शुभदीप घोष (वरिष्ठ वैज्ञानिक) श्रीमती मुक्ता एम. और श्री राजेन्द्र नाइक (वैज्ञानिक गण)
राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग विषय पर कार्यशाला	9 मार्च 2016 विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	केन्द्र के सभी कर्मचारी सदस्य

मुख्यालय के एच आर डी सेल द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:

- मुख्यालय (22 फरवरी 2016) और क्षेत्रीय/अनुसंधान केन्द्रों (23 फरवरी 2016) में नयी भर्ती किए गए स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ के लिए "अभिमुखीकरण कार्यक्रम"।
- सेन्ट्रल बोर्ड फोर वर्कर एज्यूकेशन (सी बी डब्लियु ई), श्रम मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कर्मचारियों के लिए 17 मार्च 2016 को "तनाव प्रबंधन और समय प्रबंधन पर क्षमता वर्धन" विषय पर और 20 जनवरी 2016 को "सकारात्मक दृष्टिकोण और टीम भावना में क्षमता वर्धन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

नियुक्तियाँ

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
श्री रविचन्द्र अंगाडी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	कारवार अनुसंधान केन्द्र	24.09.2015
श्री पी. षण्मुख दीक्षित कुमार	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	23.11.2015
श्री किरण के.एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	24.02.2016
श्रीमती एमी के. बेबी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	31.03.2016

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	पदोन्नत पद	केन्द्र	प्रभावी तारीख
श्री के. रामदासन, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.10.2015
श्री आर. श्रीनिवासन, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	15.10.2015
श्री विदोद पी. बगयतकर, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	06.10.2015
श्री जे. विनोद प्रभु वास, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	09.10.2015 (अपराह्न)
सुश्री सी. पुष्पा राणी, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	13.10.2015 (अपराह्न)

स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
श्री अनिरुद्ध के., एस एस एस	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	01.01.2016
श्रीमती एस. शारदा, सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	29.03.2016
श्री डब्लियु.सत्यवान नीलराज, उच्च श्रेणी लिपिक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	29.03.2016
श्री एस. महाराजन, निम्न श्रेणी लिपिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	30.03.2016

अंतर संस्थानीय स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
श्री एन. राजेश, वैज्ञानिक	सी आइ एफ ए क्षेत्रीय केन्द्र, बांगलूर	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.01.2016
डॉ. टी.जी. सुमित्रा, वैज्ञानिक	भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज़्ज़तनगर	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	15.02.2016
डॉ. शेल्टन पादुवा, वैज्ञानिक	राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि नियोजन ब्यूरो का क्षेत्रीय केन्द्र, बोरभेटा, जोरहत	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	03.03.2016

अनिवार्य सेवा निवृत्ति

नाम व पदनाम	से	प्रभावी तारीख
श्री वी. सत्यनेशन, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (पुस्तकालय)	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	22.02.2016

पद त्याग

नाम व पदनाम	से	प्रभावी तारीख
श्री एस. दामोदरन, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	11.02.2016

बैठकें

1. भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की 13वीं आइ जे एस सी की 2वीं बैठक 29 जनवरी, 2016 को आयोजित की गयी।
2. भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की संस्थान प्रबंध समिति की 79वीं बैठक कोच्ची में 29 फरवरी, 2016 को आयोजित की गयी।
3. भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की 20वीं आर ए सी बैठक 28 और 29 मार्च, 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में आयोजित की गयी।

अधिवर्षिता पर सेवा निवृत्तियाँ

श्री एम. प्रसाद राव
तकनीकी अधिकारी
31.01.2016
विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र

श्री ए. जानकीराम
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
31.01.2016
मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्रीमती पी. तंकलीलाल
सहायक
29.02.2016
मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्री आर. अप्पय्या नाइक
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
29.02.2016
मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

श्री आर. कनकराजु
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
29.02.2016
विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र

श्रद्धांजलि

डॉ. पी. परमेश्वरन पिल्लै, प्रधान वैज्ञानिक (सेवा निवृत्त) का दिनांक 14.03.2016 को कोलकत्ता में देहांत हुआ। उन्होंने वर्ष 1967 में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में अनुसंधान सहायक के पद पर कार्यग्रहण किया और 1976 में वैज्ञानिक के रूप में उनकी नियुक्ति की गयी। वर्ष 1992-1996 के दौरान वे वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग का अध्यक्ष बन गए। संस्थान में सेवा के दौरान उन्होंने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मिनिकोय और विषिंजम अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारी वैज्ञानिकों के रूप में भी काम किया है। अपने सेवा काल के प्रारंभ में डॉ. पी.पी. पिल्लै कोपीपोडों, जो समुद्री मछली हैचरियों में प्रमुख जीवित चारा हैं, पर अनुसंधान विशेषतः वर्गीकरण और जीवविज्ञान में लगे हुए थे, जिसके फलस्वरूप दो नई प्रजातियों पर विवरण मिला, *स्यूडोडयाप्टमस जोनेसी* और *लाबिडोसीरा स्यूडाकुटा*। बाद में उन्होंने ट्यूना अनुसंधान में ध्यान दिया और अपने अनुसंधान योगदानों के लिए प्रसिद्ध बन गए और संस्थान की प्रमुख पत्रिकाओं और विशेष बुलेटिनों में इन योगदानों का प्रकाशन किया गया है। वे ट्यूना मात्स्यिकी की भौगोलिक प्रवणताओं के मुख्य समीक्षक थे और हिन्द महासागर ट्यूना आयोग (आइ ओ टी सी) में भारत के नोडल अधिकारी और वैज्ञानिकों के प्रतिनिधि के रूप में अपना योगदान किया। प्रभारी वैज्ञानिक के रूप में उन्होंने लक्षद्वीप के मिनिकोय में स्थापित मिनिकोय अनुसंधान केन्द्र के विकास के लिए और विषिंजम केन्द्र के प्रभारी वैज्ञानिक होते हुए 99 वर्षों के पट्टे पर केन्द्र के लिए भूमि, जहाँ संस्थान का मकान अब स्थित है, प्राप्त करने के लिए समर्पित योगदान किया। संस्थान के सी ए एस कार्यक्रम के अंदर उन्होंने अनेक छात्रों को एम एस सी और पी एच डी कार्यक्रमों में मार्गदर्शन किया। उनके यागदानों की मान्यता के रूप में डॉ. पी.पी. पिल्लै को अपनी सेवा निवृत्ति के बाद भा कृ अनु प-एमरिटस वैज्ञानिक के रूप में नियुक्त किया गया और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में उन्होंने यह पदावधि समाप्त की।

डॉ. पी. परमेश्वरन पिल्लै

श्री सूर्यकान्त मुकुन्द टन्डेल
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
मुम्बई अनुसंधान केन्द्र
08.01.2016

श्री सी.आर. मोहनन
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची
31.01.2016

लघु पख वाले पाइलट तिमियों का व्यापक धंसन

कृपया पृष्ठ सं.11 देखें

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।